कृपालु सन्देष्टा

(मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

लेखक

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

हिन्दी अनुवाद

मुहम्मद सैफ़

प्रकाशक

सत्यमार्ग प्रकाशन

टैगोर मार्ग, लखनऊ

सभी अधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण
(२०१६)

पुस्तक : कृपालु सन्देष्टा

लेखक : बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी

अनुवादक: मुहम्मद सैफ़

पृष्ठ : 92

मूल्य : 100 रु०

मुद्रक
मुहम्मद नफ़ीस ख़ाँ नदवी

प्रकाशक:
सत्यमार्ग प्रकाशन
टैगोर मार्ग, लखनऊ

विषय—सूची

प्राक्कथन 5
रसूलुल्लाह (स0अ0) से पहले दुनिया की स्थिति 7

सम्पूर्ण कृपालु

स्वभाव की विनम्रता 16
और उसने कलिमा पढ़ लिया 17
फिर हुज़ूर से बढ़कर कोई प्रिय न रहा 18
उनकी नस्लें ईमान लाएंगी 19
और आपने अमन का परवाना लिख दिया 21
सर्वसाधारण रसूलुल्लाह स0अ0 से लाभान्वित 21
ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को बख़्श दे यह जानते नहीं..........22
अनाज नियमानुसार जाने दें 23
और आपने माफ़ कर दिया 24
दिलों की जीतना 25
कृपा सबके लिए 26
आज का दिन तो सद्व्यवहार करने का है 30
विरोधियों के साथ व्यवहार 34
रहमत की दुआ 35
जुलबजादीन की घटना 36
आप बुराई का बदला बुराई से देते ही नहीं 40
सब्र की इन्तिहा 40
क्षमा व कृपा 41

प्रेम व मुहब्बत 43
कृपा का प्रदर्शन 43
अत्यधिक नर्मी 44
इस समय तुम्हें कौन बचा सकता है 45
लोगो का अत्यधिक ध्यान रखना 45

<u>रहमत का दीन</u>

अक़ाएद (आस्था) 50
नमाज़ 53
ज़कात 55
रोज़ा 57
हज 58
अरफ़ात के भाषण की कुछ झलकियां 60
मामलात 63
सामाजिकता 67
इस्लामिक सज़ाएं व धाराएं 69
इस्लामी जिहाद 72

<u>कृपा से परिपूर्ण शिक्षाएं</u>

घर वालों के लिए 79
बच्चों के लिए 80
औरतों के लिए 81
कमज़ोरों के लिए 84
यतीमों के लिए 85
ज़रूरतमन्दों के लिए 85
नौकरों व सेवकों के लिए 86
जानवरों के लिए 88
रहमत की व्यापकता 91

بسم الله الرحمن الرحيم

प्राक्कथन

الحمد لله رب العالمين والصلاة الاتمان الاكملان على سيد الانبياء
المرسلين محمد وآله وصحبه اجمعين۔

यह किताब वास्तव में......

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ﴾

"और हमने आपको जहानों के लिए रहमत बनाया है।"

की व्याख्या है। कृपालु संदेष्टा, मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स०अ०) का पवित्र जीवन कुरआन मजीद की व्यवहारिक व्याख्या है। كان خلقه القرآن और यह जीवन ही मानवता के लिए मुक्ति का मार्ग है। (मुसनद अहमदः 25338)

रसूलुल्लाह (स०अ०) के आने से पहले दुनिया की जो हालत थी, आज उससे मिलते–जुलते हालात हैं। उसका हल केवल तमाम जहानों के लिए रहमत रसूलुल्लाह (स०अ०) का मुबारक नमूना है, जो केवल मुसलमानों के लिए नहीं बल्कि पूरी मानवता के लिए मार्गदर्शक है।

प्रस्तुत पुस्तक में पहले दुनिया के हालात पर एक पड़तालपूर्ण दृष्टि डाली गयी है। उसके बाद रसूलुल्लाह (स०अ०) के कृपा के नमूनों को प्रस्तुत करने का प्रयास

किया गया है, जिसमें एक ओर रसूलुल्लाह (स0अ0) के पवित्र जीवन की घटनाएं हैं फिर दीन–ए–रहमत अर्थात इस्लाम की एक झलक है और अन्त में रसूलुल्लाह (स0अ0) की उन शिक्षाओं और नसीहतों का वर्णन है जो पूर्ण रूप से रहमत व कृपा हैं।

दुनिया के हिंसात्मक वातावरण में इन कृपा से परिपूर्ण शिक्षाओं की आवश्यकता हर पढ़ने वाला महसूस करेगा। अल्लाह तआला इसको हम सबके दिलों में उतार दे और इसकी छवि हमें नसीब फ़रमाए।

किताब की कम्पोज़िंग, और प्रूफ़ रीडिंग इत्यादि का बेड़ा प्रिय मौलवी मुहम्मद अरमुग़ान नदवी ने उठाया। अल्लाह तआला इसको कुबूल फ़रमाए और उनके कामों में बरकत अता फ़रमाए और इस काम को भी सभी सहायकों के लिए कुबूल फ़रमाए और आख़िरत का ज़ख़ीरा (भण्डार) बनाए। आमीन।

बिलाल अब्दुल हयि हसनी नदवी
13/सफ़रुलमुज़फ़्फ़र 1437 हिजरी
मरकज़ुल इमाम अबिल हसन अल नदवी
दारे अरफ़ात, रायबरेली

بسم الله الرحمن الرحيم

रसूलुल्लाह (स०अ०) से पहले दुनिया की स्थिति

हज़रत ईसा अलै0 के आने को साढ़े पांच सौ साल गुज़र चुके थे। दुनिया की क़ौमें (समुदाय) बिना नकेल के ऊंट की भांति थीं। ऐसा प्रतीत होता था कि मानवता अब दम तोड़ देगी। मनुष्य अपनी इच्छाओं के आगे मजबूर था। रस्म व रिवाज की गुलामी से निकलना उसके लिए संभव प्रतीत न होता था। लगता था कि दुनिया की गाड़ी एक ऐसी ढ़लान पर पड़ गयी है कि शायद अब संभल न सकेगी। इस भरी दुनिया में कोई ऐसा सितारा नज़र न आता था कि चलने वाले को सही दिशा प्राप्त हो सके। दुनिया के सभी धर्म अपना स्वरूप खो चुके थे! यदि उन धर्मों के प्रथम संस्थापक व ज्ञान देने वाले लोग अर्थात अम्बिया–ए–किराम अलै0 (अल्लाह के संदेष्टा) दोबारा आकर इस स्थिति को देखते तो पहचानने से इनकार कर देते और अपनी ओर उनका संबंध कदापि गवारा न करते।

यहूदी धर्म कुछ बेजान सी रस्मों का संग्रह था। जिसमें जीवन की कोई चमक बाक़ी न थी। वह एक नस्ल पर

आधारित धर्म बनकर रह गया था। उसके पास दुनिया के लिए कोई संदेश और दुनिया की क़ौमों के लिए कोई दावत व सदकर्मों की ओर कोई निमन्त्रण और मानवता की मसीहाई का कोई सामान न था। ईसाईयत अपने प्रथम दौर से ही सेंट पॉल के बिगाड़ का शिकार हो चुकी थी। रोम के नसरानियों की मूर्ति पूजा उसके रग–रग में समा चुकी थी और हज़रत ईसा (अलै0) की शिक्षाएं उस मुश्रिकाना मलबे के नीचे दफ़्न हो चुकी थीं। पारसी धर्म भी कुछ रस्मों से अधिक कोई हैसियत न थी। उन रस्मों को अदा करने के बाद वह क़ौम बिल्कुल आज़ाद थी। अपनी इच्छाओं के अनुसार वे जीवन व्यतीत करते, उनमें और एक चरित्र हीन तथा ज़मीर को बेच देने वाले व्यक्ति में कोई अन्तर न था। बौद्ध धर्म एक ऐसे मूर्ति पूजा करने वाले धर्म में बदल चुका था कि बुत उसके पहलू में चलते थे। जहां उनका पड़ाव होता वहीं गौतम बुद्ध की मूर्ति की स्थापना कर दी जाती थी। जीवन से उसका कोई संबंध बाक़ी न रह गया था। जहां तक हिन्दू धर्म का संबंध है तो वह देवी–देवताओं की अधिकता में सबसे आगे था। उस समय उपासकों की संख्यां तैंतिस (33) करोड़ बतायी जाती है। अर्थात हर लाभ या हानि पहुंचाने वाली चीज़ उनके निकट पूजनीय थी। जहां तक अरबों का संबंध है जिनको इब्राहीम अलै0 से संबंधित होने का दावा था, वे बहुत ही घटिया क़िस्म की मूर्ति पूजा में लगे हुए थे।

इस दौर में दुनिया की दो ताक़तें बड़ी समझी जाती थीं। एक रोमन इम्पाएर (रोम) और दूसरी परिश्यन इम्पाएर (ईरान) परन्तु यह दोनों शासन सामाजिक रूप से अत्यधिक पतन का शिकार थे। व्यवहार व चरित्र के नाम मिट चुके थे। उनका काम केवल किसी न किसी तरीक़े पर धन एकत्र करना, फिर ऐश व अय्याशी में उसको ख़र्च करना था। ऐश परस्ती में वे इतना आगे बढ़ चुके थे कि उसकी सीमाएं दरिन्दगी और बरबर्ता तक पहुंच चुकी थीं। बड़ी–बड़ी दावतों में वे किसी गुलाम को पकड़कर किसी खम्बे से बांध देते और फिर उसको जलाकर उसकी रोशनी में खाना खाते और बरबरता की हद यह है कि जब वह जल कर दम तोड़ने लगता तो यह उनके लिए सबसे मूल्यवान समय (**Peak Time**) होता, उसको देखने के लिए वे टूटे पड़ते थे। उनकी गुलामों वाली मानसिकता का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि:

"जब इस्लामिक विजय के परिणाम में ईरान का आख़िरी बादशाह यज़्दगर्द अपनी राजधानी मदाइन से फ़रार हुआ तो उस हालत में भी उसके साथ एक हज़ार बावर्ची, एक हज़ार गाने वाले, एक हज़ार चीता साधने वाले और एक हज़ार शिकरों (एक प्रकार की चिड़िया) की देखभाल करने वाले और सेवकों व साथियों की एक बड़ी सख्या थी। इतने बड़े लाव–लश्कर के बावजूद भी वह इस संख्यां को कम और स्वयं को एक बहुत ही साधारण और अपमानित शरणार्थी समझता था। वह महसूस करता था कि साथियों

व सेवको कीं संख्या व ऐश व तफ़रीह के सामान की कमी के कारण उसकी हालत अत्यधिक दयनीय व कृपा करने योग्य है।" (नबी रहमतः 50–51)

इसी दासता से परिपूर्ण विचारधारा की एक घटना यह भी है कि यात्रा के दौरान उसको प्यास लगी, मिट्टी के प्याले में जब उसको पानी दिया गया तो बोला, "मैं हमेशा सोने–चांदी के बर्तनों में पानी पीने का आदी रहा हूं, मैं मर जाऊंगा, लेकिन इसमें पानी नहीं पी सकता।"

शासकों की इस ऐश से भरे हुए जीवन के साथ वहां की जनता का क्या हाल था? इसका कुछ अनुमान निम्नलिखित घटनाओं से लगाया जा सकता हैः

दूसरी ओर ग़रीब जनता अत्यधिक परेशान हाल और मुसीबत में थी और अपनी क़िस्मत को रोती थी। उनको शरीर व आत्मा का संबंध बाक़ी रखने के लिए भी अत्यधिक संघर्ष करना पड़ता था। विभिन्न प्रकार के करों, तरह–तरह की पाबन्दियों और बेड़ियों ने उनके जीवन को नर्क बना दिया था और वे जानवरों की भांति जीवन व्यतीत कर रहे थे। इस परेशानी से तंग आकर और उन टैक्सों और सेना की अनिवार्य भर्ती से परेशान होकर बहुत से किसानों ने अपने खेतों को अलविदा कह दिया और राहिबों (सन्यासियों) की कुटियों में और धर्मस्थलों में पनाह ली। वह पूर्वी सासानी साम्राज्य और पश्चिमी बाज़नतीनी साम्राज्य की लंबी व खूंखार जंगों में (जो इतिहास के भिन्न–भिन्न अन्तराल पर होती रहीं, और जिनमें न जनता की कोई

मस्लहत और न उनको उससे कोई दिलचस्पी थी) ईंधन मात्र की भांति काम आते रहे।" (नबी रहमतः 50—51)

यूरोपियन समुदाय उस समय जिहालत के दलदल में धंसे हुआ था, वे खूंखार जंगों में लगा हुए था। यूरोपियों के शरीर गन्दे व दिमाग भ्रम व खुराफ़ात से भरे हुए थे। कोई बीमार होता तो उपचार का कोई उपाय उनके पास न होता, उसको जंगल में डाल आते थे कि अच्छा होता है तो हो जाएगा नहीं तो मर जाएगा। उनके यहां यह निश्चित नहीं था कि औरत इनसान है या हैवान। ब्रीफ़ाल्ट यूरोप के उस दौर पर टिप्पणी करते हुए लिखता है:

"पांचवी सदी से लेकर दसवीं सदी तक यूरोप पर गहरा अंधकार छाया हुआ था और यह अंधकार और अधिक गाढ़ा और भयानक होता जा रहा था। उस दौर की वहशत व बरबरीयत पुराने ज़माने की वहशत व बरबरीयत से कई गुना अधिक बढ़ी—चढ़ी थी। क्योंकि उसका उदाहरण एक बड़ी सभ्यता की लाश सा था जो सड़ गयी हो, उस सभ्यता के निशान मिट रहे थे और उस पर पतन की मुहर लग चुकी थी, वे देश जहां यह सभ्यता फली—फूली और पिछले ज़माने में अपनी पराकाष्ठा को पहुंच गयी जैसे इटली, फ़्रांस वहां तबाही, अव्यवस्था और वीराने का युग था।" (नबी रहमतः 56)

भारत जो पुराने ज़माने में गणित, ग्रहों और चिकित्सा व सिद्धान्त में एक नाम पैदा कर चुका था। छठी सदी ईसवी के आरम्भ में बदतरीन दौर प्रारम्भ था, उसके

पूजास्थल भी अय्याशी से पाक न थे और न उनको ख़राब बात समझा जाता था। औरत का कोई सम्मान न था। पति के मरने के बाद उसका जीवन जानवरों से भी बदतर था। इसीलिए शरीफ़ ख़ानदानों में पति के मर जाने के बाद सती हो जाने का चलन था। जातिगत ऊंच–नीच चरम पर थी। शूद्र, अछूत समझे जाते थे। न वे कुछ कमा सकते थे, न जमा कर सकते थे, न किसी ऊंची ज़ात वाले के साथ बैठ सकते थे, न उनको छू सकते थे, न पवित्र किताबों का पढ़ना उनके लिए वैद्य था, पूरा देश विभेद का शिकार था और टुकड़ों में बटा हुआ था। इसमें सैंकड़ों राज्य थे जो आपस में लड़ाइयां लड़ा करते थे।

उस समय अरब दुनिया की सड़ी हुई सभ्यता से भले ही दूर थे किन्तु उनकी भी व्यवहारिक व्यवस्था पूरी तरह से बिगड़ चुकी थी। वे शराब और जुए के रसिया थे। उनकी कठोरता का अनुमान इससे लगाया जा सकता है कि वे केवल मान के डर से लड़कियों को ज़मीन में ज़िन्दा गाड़ दिया करते थे। औरत की उनके यहां कोई इज़्ज़त नहीं थी। क़बाइली और नस्ली, ख़ानदानी और ख़ूनी पक्षपात उनकी घुट्टी में पड़ा हुआ था। बात–बात पर झगड़े करना और मामला जंग तक पहुंच जाना आम बात थी। हाली ने इसका नक़्शा यूं खींचा है:

कभी घोड़ा आगे बढ़ाने पे झगड़ा
कभी पानी पीने, पिलाने पे झगड़ा
यूं होती रहती थी तकरार उनमें
यूं ही चलती रहती थी तलवार उनमें

एक साधारण घटना अधिकतर बहुत लम्बी और खूंखार जंग का कारण बन जाती थी। बहुत सी जंगों का सिलसिला चालीस साल चला और हज़ारों आदमी उसमें अपनी जान से हाथ धो बैठे।

संक्षेप में यह कि इतिहास का सबसे बुरा समय था। मानवता के भविष्य और उसके शेष रहने व उन्नति के अनुसार से बहुत ही अंधकारमय और मायूस करने वाला। एक हदीस में आता है कि:

"अल्लाह ने ज़मीन पर निगाह फ़रमायी तो बहुत ही नाराज़ हुआ, अरबों और अजमियों (आग्रा और द्रविड़) पर, सिवाए कुछ अहले किताब (जिन समुदायों को अल्लाह ने पुस्तक प्रदान की) के।" (सही मुस्लिम: 2865)

लेकिन अल्लाह तआला ने इनसानों की हालत पर रहम फ़रमाया मानवता की नैय्या को पार लगाने के लिए और मनुष्य को हर प्रकार की दासता से निकाल कर एक अल्लाह की दासता में लाने के लिए उसने अपने आख़िरी और अपने महबूब, ख़ातमुन्नबियीन, रहमतुल लिल आलमीन, मुहम्मदुर रसूलुल्लाह (स0अ0) को दुनिया में भेजा।

بسم الله الرحمن الرحيم

सम्पूर्ण कृपालू

दुनिया में दर्द व मुहब्बत रखने वाले बहुत आए। रहमत व अता का संदेश देने वाले भी आए। वे भी आए जिन्होंने दिलों में नर्मी पैदा की। वे भी आए जिन्होंने स्वभाव में विनम्रता पैदा की और लोगों को जोड़ने का काम किया। अपने–अपने समय में वे ज़ख़्मों का मरहम और टूटे हुए दिलों का दवा बन कर आए, मगर एक वह आया जो आया तो मानवता का चमन लहलहाने लगा, मुहब्बत के फूल खिलने लगे, दुनिया में बहार आ गयी, वह आया तो दोनों जहां के लिए रहमत बन कर आयाः

गुलिस्ताने जहां में फूल तो पहले भी खिलते थे।
क़दम जब आपके आए तो बहारों पर बहार आयी।।

क्या मनुष्यों का संसार, क्या अपने और क्या पराए, क्या दोस्त और क्या दुश्मन, उसकी रहमत की बारिश क्या हुई दुनिया जहान की सूखी हुई खेती लहलहा उठी। मुर्दा दिलों मे जान पड़ गयी, लबों पर मुस्कुराहट खिलने लगी।

ग़रीबों का मलजा यतीमों का वाली।
ख़ताकार से दरगुज़र करने वाला।।

उसकी कृपा का क्षेत्र केवल मानवीय समाज तक सीमित नहीं। सारी दुनिया के लिए वह सम्पूर्ण कृपा था जिसकी गवाही अल्लाह तआला ने दी और कहा:

﴿وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلاَّ رَحْمَةً لِّلْعَالَمِينَ﴾

"और हमने आपको तमाम जहानों के लिए रहमत बनाकर भेजा है।" (सूरह अम्बिया: 106)

वह रहमान की रहमत (कृपा) की छवि था। जिसकी रहमत के आगे अत्याचार के पहाड़ चूर-चूर हो एक। कठोर से कठोर हृदय आए और मोम होकर लौटे। अल्लाह तआला का इरशाद है:

﴿فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّهِ لِنتَ لَهُمْ وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ الْقَلْبِ لاَنفَضُّواْ مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِي الأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّهِ إِنَّ اللّهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِينَ﴾

"बस अल्लाह ही की रहमत थी कि आपने उनके साथ नर्मी फ़रमायी और यदि आप कठोर हृदय के होते तो वे आपके पास से कबके बिखर गए होते बस आप उनसे दरगुज़र कीजिए और उनके लिए अस्तग़फ़ार कीजिए और मामलों में उनसे राय लेते रहिए और फिर जब आप पक्का इरादा कर लें तो अल्लाह पर भरोसा कीजिए, बेशक अल्लाह भरोसा करने वाले को पसंद फ़रमाता है।"

(सूरह आले इमरान: 159)

यह उसकी जनसाधारण हेतु कृपा का परिणाम था कि हबश के बिलाल (रज़ि0), फ़ारस के सलमान (रज़ि0) और रोम के सुहैब (रज़ि0) आप पर मर मिटने वाले थे। हज़रत ज़ैद हारिसा गुलाम बनकर आए और चाहने वाले व चाहे जाने वाले बन गए, माता–पिता लेने के लिए आए तो आप (स0अ0) की रहमत व मुहब्बत छोड़कर उनको जाना रास न आया।

स्वभाव की विनम्रता

यह आपके कृपालु स्वभाव ही का परिणाम था कि लोग आप (स0अ0) को सलाह दे रहे हैं और आप (स0अ0) स्वभाव के विपरीत सलाह को भी स्वीकार कर रहे हैं। उहद की जंग इसकी यादगार है। आप (स0अ0) नवजवान सहाबी (रज़ि0) की राय से ही निकले, वरना आप (स0अ0) की निकलने की राय न थी, जब उन लोगों को अपने मशवरे पर शर्मिन्दगी हुई तो आप (स0अ0) ने कहा कि हथियार बांध कर वापस होना नबी का काम नहीं। यह आप (स0अ0) के स्वभाव की अत्यधिक विनम्रता की बात थी कि एक गुलाम भी आप (स0अ0) का हाथ पकड़कर मश्वरे के लिए ले जाता और जब तक चाहता आप (स0अ0) से मश्वरा करता। यह आप (स0अ0) की अत्यधिक नर्मी थी कि खाने के बाद लोग बैठे हैं आप (स0अ0) तकल्लुफ़ महसूस करते हैं मगर इसलिए उठने को नहीं कहते कि लोगों को

तकलीफ़ न पहुंचे, यहां तक कि अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में उन लोगों को आदेश दिया:

﴿فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانتَشِرُوا﴾

"फिर जब खा चुको तो अपनी–अपनी राह लो।"

(सूरह एहज़ाब: 53)

आप (स0अ0) घर से निकलते हैं और एक बूढ़ी औरत आप पर कूड़ा फेंकती है। बुरा–भला कहती है। एक दिन आप (स0अ0) निकले न आप (स0अ0) को कूड़ा नज़र आया और न उसकी आवाज़ सुनायी दी, पता चला कि वह बीमार है। आप (स0अ0) उसे देखने के लिए गए। आप (स0अ0) की रहमत को देखकर उसका दिल पिघल गया। वह बहुत शर्मिन्दा हुई।

और उसने कलिमा पढ़ लिया

इतिहास में यह घटना भी मौजूद है कि एक बूढ़ी औरत जिसके कान भरे गए थे। वह आप (स0अ0) की सख़्त दुश्मन हो गयी और एक दिन मक्का मुकर्रमा से किसी दूसरी जगह जाने के लिए निकली। सामान साथ था कोई उठाने वाला नहीं मिल रहा था, उसी समय आप (स0अ0) वहां से गुज़रे, आप (स0अ0) ने उससे कहा: अम्मा! मैं तुम्हारा सामान पहुंचा देता हूं। आप (स0अ0) सामान लेकर चले। वह साथ–साथ चली और उसकी ज़बान भी चलने लगी, वह कहती जाती थी कि बेटा मुहम्मद (स0अ0) के नाम का एक व्यक्ति है। तुम उसके बहकावे में मत

आना। वह दोस्तों को अलग कर देता है। ख़ानदान में फूट डाल देता है। आप (स0अ0) ख़ामोश सुनते रहे, जब सामान पहुंचा दिया तो केवल यह कहा कि मैं ही मुहम्मद (स0अ0) हूं। यह कहते ही उसके चेहरे पर शर्मिन्दगी के भाव प्रकट हुए और उसकी समय उसने कलिमा पढ़ लिया।

फिर हुज़ूर से बढ़कर कोई प्रिय न रहा

आप (स0अ0) तवाफ़ फ़रमा रहे हैं, एक व्यक्ति आपके क़रीब ही तवाफ़ कर रहा है। उसने भाला ज़हर से बुझा रखा है। वह अवसर की तलाश में है। आप (स0अ0) को वह्य (ईशवाणी) से पता चल जाता है, आप (स0अ0) उसका नाम लेकर पूछते हैं:

"क्या फ़ुज़ाला आता है?

फ़ुज़ाला: हां!

आप (स0अ0) ने फ़रमाया: तुम अपने दिल में अभी क्या इरादा कर रहे थे?

फ़ुज़ाला ने कहा: "कुछ नहीं, मैं तो अल्लाह–अल्लाह कर रहा था।"

आप (स0अ0) यह सुनकर हंस पड़े और कहा: "अच्छा तुम अपने ख़ुदा से अपने लिए माफ़ी मांगो" यह कहकर अपना हाथ भी उसके सीने पर रख दिया।

फ़ुज़ाला का कहना है कि हाथ रख देने से मुझे दिली सुकून प्राप्त हुआ और रसूलुल्लाह (स0अ0) की मुहब्बत

इतनी मेरे दिल में पैदा हो गयी कि रसूलुल्लाह (स0अ0) से बढ़कर कोई भी प्रिय न रहा। (सीरत रसूल–ए–अकरम:259)

लोगों को जन्नत के रास्ते की ओर लाना चाहते हैं। एक–एक व्यक्ति के लिए आप (स0अ0) का दिल तड़पता है कि कहीं यह जहन्नम में जाने वाला न बन जाए। एक–एक व्यक्ति को समझाते हैं। उसके लिए बाज़ारों में तश्रीफ़ ले जाते हैं। हज के मौसम में काफ़िले वालों से मुलाक़ात करते हैं और सही रास्ते पर लाने की कोशिश करते हैं। अजीब विमुग्धता का आलम है, एक–एक व्यक्ति से कहते है कि सभी उपासकों को छोड़कर एक अल्लाह को माबूद मान लो। बस यही कामयाबी का रास्ता है। दिल का हाल यह है कि लगता है कि इस ग़म में जान निकल जाएगी कि लोग जन्नत के रास्ते पर नहीं आते। अल्लाह तआला आप की इस हालत को बयान करता है:

﴿فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلَى آثَارِهِمْ إِن لَّمْ يُؤْمِنُوا بِهَذَا الْحَدِيثِ أَسَفًا﴾

"यदि उन्होंने यह बात न मानी तो लगता है कि आप उनके पीछे अपनी जान हलकान कर देंगे।" (कहफ़: 6)

दूसरी जगह यह शब्द हैं:

﴿فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُونُوا مُؤْمِنِينَ﴾

"शायद आप अपनी जान को हलाकत में डाल देंगे कि वे ईमान नहीं लाते।"

उनकी नस्लें ईमान लाएंगी

ताएफ़ एक हरा–भरा शहर है। मक्का के पड़ोस में है। आप (स0अ0) इस विचार से ताएफ़ का सफ़र करते हैं कि

शायद वहां के लोग सही रास्ते पर आ जाएं और अपनी कामयाबी का सामान कर लें। हज़रत ज़ैद (रज़ि0) उनके साथ हैं। आप पहाड़ों पर चढ़ते हुए कठिनाई से भरा हुआ सफ़र पूरा करते हैं और सरदारों से मुलाक़ात करके उनको इस उम्मीद से सत्य का संदेश सुनाते हैं कि शायद उनके दिल में बात उतर जाएगी किन्तु इसके विपरीत कि एक नये आए हुए मेहमान की बात न मानते तो उसका कुछ आदर सत्कार करते, वे आप (स0अ0) से बहुत ही बुरा बर्ताव करते हैं। आवारागर्दों और लफ़ंगों को लगा देते हैं। वे आप (स0अ0) को गालियां दे रहे हैं और पत्थर मार रहे हैं। आप (स0अ0) के पवित्र शरीर से ख़ून निकलने लगता है। इसी बीच एक फ़रिश्ता अल्लाह के हुक्म से आकर कहता है कि यदि आप कहें तो उन गुस्ताख़ों को पीस कर रख दिया जाए और आबादी के दोनों तरफ़ के पहाड़ों को अल्लाह के हुक्म से मिला दिया जाए। मगर सदक़े उस रहमत–ए–मुजस्स्म (पूर्णतयः कृपालु) के आप की ज़बान मुबारक पर यह शब्द आते हैं कि नहीं, नहीं! यदि यह ईमान नहीं लाए तो क्या, उनकी आने वाली नस्लें ईमान में दाख़िल होंगी। मक्का मुकर्रमा का पूरा जीवन कैसी कठिनाइयों से बीता, किस–किस प्रकार से सताया गया, लेकिन कभी भी आप (स0अ0) ने बद्दुआ नहीं की।

(ज़ादुल मआदः 31/3)

और आपने अमन का परवाना लिख दिया

मक्का से मदीना की ओर हिजरत (पलायन) है। आपके दुश्मन आपके पीछे लगे हैं। सुराक़ा ढूंढ़ता हुआ पहुंच जाता है, लेकिन उसके घोड़े के पांव अल्लाह के हुक्म से धंस जाते हैं, वह अपना इरादा बदलता है। यकायक पांव रेत से बाहर आ जाते हैं। सौ ऊंटो का ईनाम मामूली नहीं, नियत फिर बदलती है और बुरे इरादे से वह आगे बढ़ता है, तो फिर पांव धंसा दिए जाते हैं, अन्त में वह आप (स0अ0) से पनाह मांगता है, आप (स0अ0) केवल यही नहीं कि उस व्यक्ति को क्षमा कर देते हैं, जो आपकी हत्या के लिए आया बल्कि उसकी इच्छा पर उसके लिए शांति का फ़रमान भी लिखवा देते हैं। (सही बुख़ारी: 3906)

सर्वसाधारण रसूलुल्लाह (स0अ0) से लाभान्वित

बदर की जंग इस्लाम में विशेष महत्व रखती है। आप (स0अ0) के साथ केवल तीन सौ तेरह सहाबी (रज़ि0) हैं और सामने मुश्रिकों की हथियारों से लैस सेना है। मुसलमानों ने हज़रत हब्बाब बिन मुन्ज़िर के सुझाव से कुवों पर क़ब्ज़ा कर रखा है लेकिन साक़ी–ए–कौसर (रसूलुल्लाह स0अ0) की कृपा सर्वसाधारण हेतु है, दुश्मनों को भी पानी लेने की छूट है।

बदर के युद्धबन्दी लाए जाते हैं। यह वे लोग हैं जिन्होंने दुश्मनी में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। लेकिन आप

(स0अ0) सहाबा से फ़रमाते हैं कि उनको आराम के साथ रखा जाएः

"जंग के क़ैदी दो–दो, चार–चार सहाबा किराम को बाँट दिए गए और कहा गया कि आराम के साथ रखे जाएं। सहाबा (रज़ि0) ने उनके साथ यह बर्ताव किया कि उनको खाना खिलाते और खुद खजूर खाकर रह जाते थे। उन क़ैदियों में अबू उज़ैर भी थे, जो हज़रत मुसअब बिन उमैर के भाई थे, उनका बयान है कि मुझको जिन अन्सारियों ने अपने घर में क़ैद कर रखा था, जब सुबह या शाम का खाना खिलाते तो रोटी मेरे सामने रख देते और ख़ुद खजूरें उठा लेते, मुझको शर्म आती और मैं रोटी उनके हाथ में दे देता लेकिन वे हाथ भी न लगाते और मुझ ही को वापिस कर देते, यह इसलिए था कि आप (स0अ0) ने कहा था कि क़ैदियों के साथ अच्छा बर्ताव किया जाए।"

(सीरत रसूल–ए–अकरमः 136–137)

ऐ अल्लाह! मेरी क़ौम को बख़्श दे यह जानते नहीं

उहद की जंग में मुश्रिक (अल्लाह की ज़ात में किसी को शामिल करने वाले) आप (स0अ0) तक पहुंच जाते हैं और आप (स0अ0) के चेहरे मुबारक को ज़ख़्मी कर देते हैं, आप (स0अ0) का मुबारक दाँत शहीद हो जाता है, वे बेदर्द रसूलुल्लाह (स0अ0) पर तीर बरसा रहे हैं और आपकी ज़बान पर यह शब्द हैं:

"ऐ मेरे रब! मेरी क़ौम को बख़्श दे यह जानते नहीं।"

(बुख़ारीः 6929)

जंग के ख़त्म होने पर बहुत से सहाबा ने कहा कि काश आप मुश्रिकों के लिए बद्दुआ फ़रमाएं, आप (स0अ0) ने फ़रमायाः "मैं लानत करने के लिए नहीं भेजा गया मुझे खुदा की ओर बुलाने वाला और पूरी तरह से रहमत बनाकर भेजा गया है, ऐ खुदा! मेरी क़ौम को हिदायत दे, क्योंकि वे मुझे नहीं जानते।" (शोएबुल ईमानः 1375)

अनाज नियमानुसार जाने दें

हज़रत समामा (रज़ि0) ने इस्लाम कुबूल किया। वे यमामा देश के नागरिक थे। इस्लाम स्वीकार करके वे उमरा करने मक्का मुकर्रमा पहुंचे। वहां के एक व्यक्ति ने पूछा कहो, तुम बद्दीन हो गए? हज़रत समामा ने कहाः नहीं, मैं मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0) पर ईमान लाया हूँ और इस्लाम कुबूल किया अब याद रखना यमामा देश से तुम्हारे पास एक दाना गेहूं भी नहीं आएगा जब तक आप (स0अ0) की इजाज़त न होगी। (बुख़ारीः 4372)

"हज़रत समामा ने अपने देश पहुंचते ही मक्का मुकर्रमा की ओर आने वाला अनाज बन्द कर दिया, अनाज की आमद रुक जाने से मक्का वाले बिलबिला उठे और अन्त में मुहम्मद (स0अ0) से फ़रियाद करनी पड़ी। नबी (स0अ0) ने समामा (रज़ि0) को लिख दिया कि अनाज नियमानुसार जानें दें। (उन दिनों मक्का वाले रसूलुल्लाह स0अ0 की जान के दुश्मन थे) इस घटना से न केवल यह साबित हुआ कि नबी (स0अ0) ने क्यों एक व्यक्ति की जान बख़्शी जो

खुद भी अपनेआप को वाजिबुल क़त्ल समझता था और न केवल यह साबित हुआ कि नबी करीम (स0अ0) के पवित्र हालात और व्यवहार का लोगों पर कैसा असर होता था कि समामा जैसा व्यक्ति जो इस्लाम और मदीना और आप (स0अ0) से अत्यधिक नफ़रत करता था तीन दिन बाद खुशी से अपने आप मुसलमान हो गया था। बल्कि रसूलुल्लाह (स0अ0) की नेकी और अन्तरात्मा की पवित्रता और रहम दिली का सुबूत इस प्रकार मिलता है कि मक्के के जिन काफ़िरों ने आप (स0अ0) को मक्का से निकाला था और बदद, उहद, ख़न्दक़ में अब तक नबी (स0अ0) और मुसलमानों को तबाह व बर्बाद करने के लिए सारी ताक़त ख़र्च कर चुके थे, उनके लिए आप (स0अ0) यह पसंद नहीं करते थे कि उनका ग़ल्ला रोक दिया जाए और उनको परेशान करके व नीचा दिखाकर अपना पैरोकार बनाया जाए।" (सीरत रसूल–ए–अकरम: 194–195)

और आपने माफ़ कर दिया

ख़ैबर के युद्ध के अवसर पर एक यहूदी औरत ने आप (स0अ0) को ज़हर दिया और इस प्रकार कि लोगों से पूछा कि आप (स0अ0) को कौन सा गोश्त (माँस) ज़्यादा पसंद है? जब उसको पता चला कि दस्त का गोश्त ज़्यादा पसंद है तो उसने आप (स0अ0) की सेवा में भुनी हुई बकरी प्रस्तुत की और दस्त में ख़ूब ज़हर मिला दिया, जब आप (स0अ0) ने उसमें से कुछ लेना चाहा तो अल्लाह की तरफ़

से आप (स0अ0) को सूचना दी गयी कि उसमें ज़हर मिला हुआ है। आप (स0अ0) ने यहूदियों से पूछा तो उन्होंने स्वीकार कर लिया। औरत को हाज़िर किया गया और उसने कहा कि मैंने मार डालने ही के लिए ज़हर मिलाया था। मगर आप (स0अ0) ने माफ़ कर दिया।

(सही बुख़ारी: 3169)

दिलों को जीतना

मक्का विजय के अवसर पर जगह–जगह रसूलुल्लाह (स0अ0) की रहमतुल लिल आलमीनी (सर्व साधारण हेतु कृपा) के जलवे नज़र आते हैं। बल्कि वास्तविकता यह है कि मक्का विजय का सबसे बड़ा कारण ही वह घटना बनी जिसने आप (स0अ0) के नर्म व कोमल और मानवता से परिपूर्ण दिल को तड़पा दिया। सीरत लिखने वाले लिखते हैं:

"सन् 6 हिजरी में जो संधि कुरैश ने रसूलुल्लाह (स0अ0) से हुदैबिया नामक स्थान पर की थी, उसकी एक धारा में यह था कि दस साल जंग न होगी। इस शर्त में जो क़ौमें नबी करीम (स0अ0) की ओर मिलना चाहें वे उधर मिल जाएं और जो कुरैश की ओर मिलना चाहें वे इधर मिल जाएं।"

इसके अनुसार बनी ख़ुज़ाआ नबी (स0अ0) की तरफ़ नबी (स0अ0) की तरफ़ और बनूबकर कुरैश की तरफ़ मिल गए थे। संधि को अभी दो बरस भी न पूरे हुए थे कि बनू

बकर ने बनू खुज़ाआ पर हमला कर दिया और कुरैश ने भी असलहे से मदद की। अकरमा बिन अबी जहल, सुहैल बिन अम्र (संधि पर उसी ने हस्ताक्षर किए थे) सफ़वान बिन उमैया (कुरैश का मशहूर सरदार) ने स्वयं भी नक़ाब पोश होकर अपने सहयोगियों के साथ बनू खुज़ाआ पर आक्रमण कर दिया। उन बेचारों ने जान की भीख भी मांगी, भागकर ख़ाना–ए–काबा में पनाह ली, मगर उनको हर जगह बेदर्दी से काट दिया गया। जब यह पीड़ित "इलाहका–इलाहका" (अपने खुदा के वास्ते) कह कर रहम की भीख मांगते तो वे ज़ालिम उनको जवाब में कहते थे "ला इलाहल यौमा" (आज खुदा कोई चीज़ नहीं) पीड़ित वर्ग के बचे–खुचे चालिस आदमी जिन्होंने भागकर अपनी जान बचा ली थी, रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में पहुंचे और अपने पीड़ित व बर्बाद होने की कहानी सुनाई।

(सीरत रसूल–ए–अकरम: 243–244)

इन घटनाओं को सुनकर आप (स0अ0) का दिल भर आया। संधि की पाबन्दी, पीड़ित पक्षकार की फ़रियाद सुनी, साथी क़बीले से आगे के लिए सुरक्षा की ख़ातिर रसूलुल्लाह (स0अ0) दस हज़ार की जमाअत के साथ मक्का रवाना हुए।

कृपा सबके लिए

"रास्ते में अबूसुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब और अब्दुल्लाह बिन अबू उमैय्या रसूलुल्लाह (स0अ0) से मिले। ये वे लोग थे जिन्होंने रसूलुल्लाह

(स0अ0) को बहुत तकलीफ़ दी थी और इस्लाम को मिटाने के लिए बड़ी कोशिशें की थी, रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उन्हें देखा और रुख़ फेर लिया, उम्मुल मोमीनीन उम्मे सलमा ने अर्ज़ किया:

"या रसूलुल्लाह (स0अ0)! अबूसुफ़ियान आपके सगे चचा का बेटा है और अब्दुल्लाह सगी फूफी (आतिका) का लड़का है, इतने क़रीबी तो कृपा से वंचित नहीं रहने चाहिएं।"

उसके बाद हज़रत अली (रज़ि0) ने उन दोनों को यह उपाय बताया कि जिन शब्दों में भाई यूसुफ़ ने माफ़ी मांगी थी, तुम भी रसूलुल्लाह (स0अ0) की ख़िदमत में जाकर उन्हीं शब्दों का प्रयोग करो, नबी करीम (स0अ0) के रहम व करम से उम्मीद है कि अवश्य सफल हो जाओगे।

उन्होंने रसूलुल्लाह (स0अ0) के दरबार में जाकर यह आयत पढ़ी:

﴿تَاللّٰهِ لَقَدْ آثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخَاطِئِينَ﴾

"उन्होंने कहा कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह ही ने आपको हम पर वरीयता दी और हम ही गुनाहगार हैं।"

(सूरह यूसुफ़: 91)

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने जवाब में कहा:

لا تثريب عليكم اليوم يغفر الله لكم وهو أرحم الراحمين

(नसाई: 11298) (सीरत रसूल—ए—अकरम: 244—249)

"रसूलुल्लाह (स0अ0) ने माफ़ी और अमन व सुरक्षा उस रोज़ बढ़ा दी कि मक्का वालों में केवल वही व्यक्ति नुक़सान उठा सकता था जो ख़ुद माफ़ी और सलामती का इच्छुक न हो और अपने जीवन से अप्रसन्न हो। आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि जो अबू सुफ़ियान के घर में प्रवेश कर जाएगा उसको पनाह मिलेगी। जो अपने घर का दरवाज़ा बन्द कर लेगा वह सुरक्षित है। जो मस्जिद–ए–हराम में प्रवेश करेगा उसको अमन अर्थात वह सुरक्षित है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने लश्कर वालों (वह जमाअत जो रसूलुल्लाह स0अ0 के साथ थी) को नसीहत की कि मक्का में दाख़िल होते समय केवल उस व्यक्ति पर हाथ उठांए जो उनके रास्ते में आए और उनका विरोध करे। आप (स0अ0) ने उसका भी आदेश दिया कि मक्का वालों की जाएदाद के बारे में पूरी एहतियात बरती जाए उसके बारे में हाथ न उठाया जाए।"

(सीरत रसूल–ए–अकरमः 248)

"मक्का की विजय के दिन एक व्यक्ति ने आप (स0अ0) से बातचीत की तो वह डर के मारे कांपने लगा, रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः डरो नहीं, संतुष्टि रखो, मैं कोई बादशाह नहीं हूँ। मैं तो कुरैश की एक ऐसी औरत का बेटा हूँ जो गोश्त के सूखे टुकड़े खाया करती थी।"

आज तो माफ़ी का दिन है

जब हज़रत साद बिन अबादा (रज़ि0) जो अन्सार सेना के सेनापति थे, अबूसुफ़ियान के पास से गुज़रे, उन्होंने कहाः

"आज घमसान का दिन है, और खून बहाने का दिन है, आज काबा में सब जाएज़ होगा, अल्लाह तआला ने कुरैश को अपमानित किया है।" (कन्ज़ुल उम्मालः 30173)

जब रसूलुल्लाह (स0अ0) अपने में दस्ते में अबूसुफ़ियान के पास से गुज़रे तो उन्होंने आप (स0अ0) से उसकी शिकायत की और कहा कि या रसूलुल्लाह (स0अ0)! आपने सुना कि साद ने क्या कहा? उन्होंने वह सब दोहरा दिया, साद के शब्दों को आप (स0अ0) ने नापसंद किया और कहाः "नहीं आज तो रहम व माफ़ी का दिन है, आज अल्लाह तआला क़ुरैश को इज़्ज़त अता फ़रमाएगा और काबा की महानता बढ़ाएगा।" (कन्ज़ुल उम्मालः 30173)

आप (स0अ0) ने हज़रत साद (रज़ि0) को बुलवा भेजा और इस्लामी झण्डा उनसे लेकर उनके बेटे क़ैस (रज़ि0) के हवाले कर दिया। आप (स0अ0) ने यह ख़्याल किया कि उनके बेटे को झण्डा देने का अर्थ यह होगा कि मानो झण्डा उनसे वापिस नहीं लिया गया।

इस तरह एक शब्द के बदलाव (الملحمة) के बजाए (المرحمة) कह देने और एक हाथ को दूसरे हाथ से बदल देने से (जिसमें से एक बाप का था दूसरा बेटे का) आप (स0अ0)

ने साद बिन अब्बास (रज़ि0) (जिनके ईमानी और मुजाहिदाना कारनामें सूरज की तरह रोशन थे) का दिल तोड़े बिना अबूसुफ़ियान के (जिनके दिल को जोड़ने की ज़रूरत थी) दिलजोई का सामान ऐसे युक्तिपूर्ण बल्कि चमत्कारी रूप से पूरा कर दिया, जिससे बेहतर तरीक़ा समझ में आना मुश्किल है। बाप के बजाए उनके बेटे को यह पद दिया जिससे अबूसुफ़ियान के ज़ख़्म खाए हुए दिल को सुकून पहुंचाना था, दूसरी ओर रसूलुल्लाह (स0अ0) हज़रत साद बिन अबादा (रज़ि0) को अपमानित नहीं देखना चाहते थे, जिन्होंने इस्लाम की बड़ी सेवा की थी।

(सीरत रसूल–ए–अकरमः 250–252)

आज का दिन तो सद्व्यवहार करने का है

जब रसूलुल्लाह (स0अ0) मक्का मुकर्रमा में अपने स्थान पर पहुंच गए और लोग भी संतुष्ट हो गए तो उस समय आप (स0अ0) बाहर आए, बैतुल्लाह (अल्लाह का घर अर्थात काबा) की ओर रवाना हुए और वहां जाकर आप (स0अ0) ने तवाफ़ कियाः

"जब आप (स0अ0) ने तवाफ़ पूरा कर लिया तो उस्मान बिन तलहा को जो काबा की चाभी के रखने वाले थे बुलवाया, काबा की चाभी उनसे ली। दरवाज़ा खोला गया और आप (स0अ0) काबे में दाख़िल हुए। उससे पहले जब आप (स0अ0) ने मदीना हिजरत से पहले एक दिन यह चाभी मांगी थी तो उन्होंने कठोर उत्तर दिया था।" और आप (स0अ0) से कठोर बातचीत की थी और आप (स0अ0)

ने सब्र व धैर्य से काम लेते हुए कहा था: उस्मान!तुम यह चाभी किसी दिन मेरे हाथ में देखोगे। उस समय मैं जिसे चाहूंगा, उसे मैं यह दूंगा। उसके जवाब में उन्होंने कहा था: अगर ऐसा हुआ तो वह दिन कुरैश के बड़े अपमान व तबाही का होगा। आप (स0अ0) ने फ़रमाया: नहीं, उस दिन वे आबाद व सम्मानित होंगे, यह शब्द उस्मान बिन तलहा के दिल पर छप गए और उन्होंने महसूस किया कि जैसा आप (स0अ0) ने फ़रमाया वैसा ही होगा।

जब आप (स0अ0) काबे से बाहर तशरीफ़ लाए तो कुन्जी रसूलुल्लाह (स0अ0) के पवित्र हाथों में थी। रसूलुल्लाह (स0अ0) को देखते ही हज़रत अली (रज़ि0) खड़े हो गए और कहा: "अल्लाह आप (स0अ0) पर दरूद व सलाम भेजे, आप (स0अ0) सक़ाया (पानी पिलाने की व्यवस्था) के साथ हिजाबा (बैतुल्लाह की दरबानी) भी हमें अता फ़रमाएं।"

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया: "आज का दिन तो सदव्यवहार करने और पूरा ईनाम देने का है।" फिर उस्मान को बुलाया चाभी उन्हीं के हाथों में दी और कहा कि: "जो कोई तुमसे यह चाभी छीनेगा तो वह अत्याचार होगा।"

(सीरत रसूल–ए–अकरम: 254–255)

तुम सब आज़ाद हो

"भाषण के बाद रसूलुल्लाह (स0अ0) ने भीड़ की ओर देखा तो कुरैश के बड़े–बड़े लोग सामने थे। उनमें वे हौसलामन्द लोग भी थे जो इस्लाम को मिटाने में सबसे आगे थे। वे भी थे जिनकी ज़बाने रसूलुल्लाह (स0अ0) पर

गालियों के बादल बरसाया करती थीं। वे भी थे जिनकी तलवारों ने रसूलुल्लाह (स0अ0) के साथ गुस्ताख़ी की थी। वे भी थे जिन्होंने रसूलुल्लाह (स0अ0) के रास्ते में कांटे बिछाए थे। वे भी थे जो उपदेश देते समय रसूलुल्लाह (स0अ0) की एड़ियों को लहूलुहान कर दिया करते थे। वे भी थे जिनके हमलो का सैलाब मदीना की दीवारों से आ–आकर टकराता था। वे भी थे जो मुसलमानों को जलती हुई रेत पर लिटा कर उनके सीनों पर आग की मुहर लगाया करते थे।

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उनकी ओर देखा और भयावह अन्दाज़ में उनसे पूछा, "तुम को कुछ मालूम है? मैं तुम्हारे साथ क्या करने वाला हूं?"

यह लोग यद्यपि अत्याचारी थे, लेकिन स्वभाव से परिचित थे, पुकार उठे कि "आप शरीफ़ भाई हैं और शरीफ़ भाई के बेटे हैं।"

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहाः "तुम पर कुछ आरोप नहीं जाओ, सब आज़ाद हो।" (नसाईः 11298)

मक्का के काफ़िर ने सभी मुहाजिरों के मकानों पर क़ब्ज़ा कर लिया था, अब समय आ गया था कि उनके अधिकार दिलाए जाते, लेकिन आप (स0अ0) ने मुहाजिरों को आदेश दिया कि वे भी अपनी संपत्तियों को छोड़ दें।"

(सीरत रसूल–ए–अकरमः 256–257)

अरब के रईसों में दस व्यक्ति थे जो कुरैश के सरताज थे। उनमें से सफ़वान बिन उमैया जद्दह भाग गए। उमैर

बिन वहब ने रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में आकर कहा कि अरब का रईस मक्का से जाने वाला है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अमान ने नाम पर अपना अमामा दिया। उमैर जद्दह पहुंच कर उनको वापिस लाए। हुनैन के युद्ध तक वे इस्लाम नहीं लाए।

अब्दुल्लाह बिन ज़ुबइरी अरब का शायर जो कि रसूलुल्लाह (स0अ0) का अपमान किया करता था और कुरआन मजीद पर टिप्पणियों किया करता था, नजरान भाग गया लेकिन फिर आकर इस्लाम लाया।

हारिस बिन हिशाम की बेटी उम्मे हकीम अकरमा बिन अबूजहल की बीवी थीं। वे मक्का की विजय के दिन इस्लाम लायीं। लेकिन उनके पति अकरमा बिन अबूजहल इस्लाम से भागकर यमन चले गए। उम्मे हकीम यमन गयीं और उनको इस्लाम की दावत दी और वे मुसलमान हो गए और मक्का में आए। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने जब उनको देखा तो ख़ुशी से उठ खड़े हुए और उस तेज़ी से उसकी तरफ़ बढ़े की शरीर पर चादर तक न थी, फिर उनसे बैत ली।

वहशी को भी माफ़ी दी गयी जिसने अमीर हमज़ा को धोखे से मारा था और फिर लाश को अपमानित किया था।

(सीरत रसूल–ए–अकरम: 258–259)

दुनिया जानती है कि युद्धबन्दियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है। दुनिया के इतिहास का अध्ययन करने वालों के सामने यह वास्तविकता छिपी हुई नहीं कि

सभ्यता व संस्कृति का ढिंढोरा पीटने वालों ने आम नागरिकों के साथ क्या कुछ नहीं किया। मारे जाने वालों की संख्या उन घटनाओं में लाखों में नहीं करोड़ो में है। लेकिन इस्लाम की सबसे बड़ी विजय मक्का की विजय है, जिसके बाद *"यदखुलूना फ़ी दीनिललाहि अफ़वाजा"* का समा बंध गया। यह उसकी प्रथक–प्रथक घटनाएं हैं, जो रसूलुल्लाह (स0अ0) की पूर्ण रूप से कृपालु व्यक्तित्व का सदक़ा हैं। पूरे युद्ध में दो–एक घटनाओं को छोड़कर न किसी का ख़ून बहा और न ही किसी की नकसीर फूटी। रहमदिली व आम माफ़ी की इससे बढ़कर कोई तस्वीर दुनिया ने न देखी है और न ही क़यामत तक देख सकेगी।

विरोधियों के साथ व्यवहार

"युद्ध में विरोधियों की संख्या दो हज़ार से भी अधिक थी। उनमें हज़रत शीमा भी थीं जो रसूलुल्लाह (स0अ0) की रज़ाई बहन थीं। लोगों ने जब उनको गिरफ़्तार किया तो कहा: "मैं तुम्हारे पैग़म्बर की बहन हूँ" लोग प्रमाण के लिए रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास लाए, उन्होंने पीठ खोल कर दिखाई किस प्रकार एक बार बचपन में आपने दांत से काटा था तो यह उसका निशान है। प्रेमभाव से रसूलुल्लाह (स0अ0) की आंखो में आंसू भर आए, उनके बैठने के लिए स्वयं चादर इत्यादि बिछायी, स्नेहपूर्वक बातें की, कुछ शुतुर और बकरियां दी और कहा: जी चाहे तो मेरे घर चल कर रहो और अगर घर जाना चाहो तो वहां पहुंचा दिया जाए।

उन्होंने ख़ानदान की मुहब्बत से घर जाना चाहा, अतः मान सम्मान के साथ घर पहुंचा दी गयीं।"

(सीरत रसूल—ए—अकरम: 267)

रहमत की दुआ

मक्का विजय और हुनैन के युद्ध के बाद आप (स0अ0) ने ताएफ़ का घेराव किया लेकिन ताएफ़ वाले क़िले में रहे और किला फ़तेह न हो सका। सहाबा ने कहा कि रसूलुल्लाह (स0अ0) आप उनके हक़ में बद्दुआ करें, यद्यपि यह वही ताएफ़ था जहां आप (स0अ0) के साथ अत्यधिक अत्याचार और मानवता रहित व्यवहार किया गया था, मगर रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया:

"ऐ अल्लाह! सक़ीफ़ को हिदायत फ़रमा और उनको तौफ़ीक़ दे कि वे मेरे पा आ जाएं।"

(तब्क़ात इब्ने साद: 159/2)

हुनैन के क़ैदियों के साथ बर्ताव

"हुनैन के युद्धबन्दी अब तक जुअराना में सुरक्षित थे एक सम्मानित प्रतिनिधिमण्डल रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में उपस्थित हुआ कि युद्धबन्दियों को रिहा कर दिया जाए। यह क़बीला वह था कि आप (स0अ0) की दूध पिलाने वाली माता हलीमा उसी क़बीले से थीं। क़बीले के मुखिया ने भाषण दिया और रसूलुल्लाह (स0अ0) को सम्बोधित करके कहा: "जो औरतें छप्परों में है उनमें आप (स0अ0) की फूफियां और आप (स0अ0) की ख़ालाएं हैं, ख़ुदा की क़सम!

अरब के सुल्तानों में से किसी ने हमारे ख़ानदान का दूध पिया होता तो हमें उनसे बहुत कुछ उम्मीदें होंती और आप से तो और भी अधिक आशांए हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि, "ख़ानदान अब्दुल मुत्तलिब का जितना हिस्सा है वह तुम्हारा है, लेकिन आम रिहाई का उपाय यह है कि नमाज़ के बाद जब भीड़ हो तो सबके सामने यह बात रखो। ज़ुहर की नमाज़ के बाद उन लोगों ने भीड़ के सामने यह प्रार्थना की, आप (स0अ0) ने फ़रमायाः "मुझको तो केवल अपने परिवार पर अधिकार है, लेकिन मैं सभी मुसलमानों से उनके लिए सिफ़ारिश करता हूं। मुहाजिर व अन्सार बोल उठे "हमारा हिस्सा भी हाज़िर है, इस प्रकार छ हज़ार एक साथ आज़ाद हुए।"

(सीरत रसूल–ए–अकरमः 272)

ज़ुलबजादीन की घटना

ज़ुलबजा दीन एक ग़रीब सहाबी थे, तबूक के पड़ाव के दौरान उनकी मृत्यु हुई।

"इस शुभचिन्तक की चर्चा से साफ़ होता है कि नबी करीम (स0अ0) ग़रीब व मुख़लिस सहाबा पर कितना मेहरबान होते थे, उनका नाम अब्दुल्लाह था। अभी बच्चे ही थे कि बाप मर गया। चचा ने परवरिश की थी। जब जवान हुए तो चचा ने ऊंट, बकरियां, गुलाम देकर उनकी आर्थिक स्थिति ठीक कर दी थी। अब्दुल्लाह ने इस्लाम से संबंधित कुछ सुना और दिल में तौहीद का शौक़ पैदा हुआ लेकिन

चचा से इतना डरते थे कि इस्लाम का इज़हार न कर सके। जब नबी करीम (स0अ0) मक्का विजय के बाद वापिस गए तो अब्दुल्लाह ने चचा से जाकर कहा:

"प्यारे चचा! मुझे बरसों इन्तिज़ार करते गुज़र गए कि कब आपके दिल में इस्लाम की तहरीक पैदा होती है और आप कब मुसलमान होते हैं, लेकिन आपका हाल वही पहले का सा चला आता है। मैं अपनी उम्र पर अधिक विश्वास नहीं कर सकता। मुझे आज्ञा दीजिए कि मैं मुसलमान हो जाऊं।"

चचा ने उत्तर दिया: "देख अगर तू मुहम्मद (स0अ0) का दीन स्वीकार करना चाहता है तो मैं सबकुछ तुझसे छीन लूंगा, तेरे बदन पर चादर और तहबन्द तक बाक़ी न रहने दूंगा।"

अब्दुल्लाह ने जवाब दिया: "चचाजान! मैं मुसलमान ज़रूर बनूंगा और मुहम्मद (स0अ0) का ही रास्ता अपनाऊंगा। शिर्क और बुतपरस्ती से बेज़ार हो चुका हूं, अब जो आपकी मर्ज़ी है कीजिए और जो कुछ मेरे पास धन–दौलत इत्यादि है, सबकुछ ले लीजिए। मैं जानता हूं कि उन सब चीज़ों को आख़िर एक दिन यहीं दुनिया में छोड़ जाना है इसलिए मैं उन चीज़ों के लिए सच्चे दीन को नहीं छोड़ सकता।"

अब्दुल्लाह ने यह कह कर कपड़े उतार दिए और मां के सामने गए। मां देखकर हैरान हुई कि क्या हुआ? अब्दुल्लाह ने कहा: मैं मोमिन और एक अल्लाह को मानने

वाला हो गया हूं, नबी करीम (स0अ0) की सेवा में जाना चाहता हूं, सतर (बदन) छिपाने के लिए कपड़े की ज़रूरत है। मेहरबानी करके दे दीजिए। मां ने एक कम्बल दे दिया। अब्दुल्लाह ने कम्बल फाड़कर आधे का तहबन्द बना लिया। आधा ओढ़ लिया और मदीना रवाना हुए। सुबह–सुबह मस्जिद–ए–नबवी पहुंच गए और मस्जिद से टेक लगाकर इन्तिज़ार में बैठ गए। नबी करीम (स0अ0) जब मस्जिद में आए तो उन्होंने देखकर पूछा कि कौन हो? कहाः मेरा नाम अब्दुल उज़्ज़ा है। फ़क़ीर व यात्री हूँ। रसूलुल्लाह (स0अ0) के इश्क़ और हिदायत की चाह में आपके दर पर आ पहुंचा हूँ।

नबी करीम (स0अ0) ने कहाः तुम्हारा नाम अब्दुल्लाह है। ज़ुलबजादीन लक़ब। तुम हमारे क़रीब ही ठहरो और मस्जिद में रहा करो।

हज़रत अब्दुल्लाह असहाबे सुफ़्फ़ा (सुफ़्फ़ा वाले) में शामिल हो गए। नबी करीम (स0अ0) से कुरआन सीखते और दिन भर अजीब शौक़ व जोश से कुरआन पढ़ा करते।

एक बार उमर फ़ारूक़ (रज़ि0) ने कहा कि लोग तो नमाज़ पढ़ रहे हैं और यह देहाती इतनी तेज़ आवाज़ से पढ़ रहा है कि दूसरों के क़िराअत में दख़ल पड़ रहा है। नबी करीम (स0अ0) ने कहाः उमर! उसे कुछ न कहो यह तो खुदा और रसूल के लिए सब कुछ छोड़छाड़ कर आया है।

अब्दुल्लाह के सामने तबूक के युद्ध की तैयारी होने लगी तो वे भी रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में उपस्थित हुए। कहा कि रसूलुल्लाह (स0अ0)! दुआ कीजिए कि मैं भी अल्लाह की राह में शहीद हो जाऊं। नबी करीम (स0अ0) ने कहाः जाओ किसी पेड़ का छिलका उतार लाओ, छिलका ले आए तो नबी करीम (स0अ0) ने वह छिलका उनके बाज़ू पर बांध दिया और कहा कि, इलाही मैं कुफ़्फ़ार पर इसका ख़ून हराम करता हूँ। अब्दुल्लाह ने कहाः या रसूलुल्लाह (स0अ0)! मैं तो शहादत का इच्छुक हूं, नबी करीम (स0अ0) ने फ़रमायाः जब जंग की नियत से तुम निकलो और फिर तप आ जाए और मर जाओ तब भी तुम शहीद हो। तबूक पहुंच कर यही हुआ बुख़ार चढ़ा और परलोक सिधार गए। बिलाल बिन हारिस मुज़नी का बयान है कि मैंने अब्दुल्लाह के दफ़न की कैफ़ियत देखी हैः

रात का वक़्त था। हज़रत बिलाल के हाथों में चिराग़ था। अबूबक्र उसकी लाश को गढ़े में रख रहे थे, नबी करीम (स0अ0) भी उस समय क़ब्र में उतरे थे और अबूबक्र (रज़ि0) से कह रहे थे, अपने भाई को मुझसे क़रीब करो, रसूलुल्लाह (स0अ0) ने क़ब्र में ईंटे भी अपने हाथ से रखी और फिर दुआ कीः "ऐ अल्लाह! मैं उनसे राज़ी हूँ, तो भी उनसे राज़ी हो जा।" इब्ने मसऊद (रज़ि0) कहते हैंः "काश इस क़ब्र में मैं दफ़न कर दिया जाता।"

(सीरत रसूल–ए–अकरमः 280–283)

आप बुराई का बदला बुराई से देते ही नहीं

एक बार एक बद्दू ने आप (स0अ0) की चादर पकड़ कर खींचना शुरू किया, यहां तक कि चादर के निशान आपकी गर्दन पर पड़ गए। कहने लगा कि तुम्हारे पास अल्लाह का जो माल है वह मेरे दोनों ऊंटो पर लाद दो, यह तुम्हारा या तुम्हारे बाप का माल नहीं है। इस पर आप (स0अ0) ने केवल इतना कहा कि निसंदेह माल अल्लाह का है और मैं अल्लाह का बन्दा हूं और तुमने जो मेरे साथ किया है उसका बदला लिया जाएगा। बद्दू बोलाः नहीं लिया जाएगा, आप (स0अ0) ने कहा कि क्यों नहीं लिया जाएगा। उसने कहा कि आप बुराई का बदला बुराई से देते ही नहीं। इस पर आप (स0अ0) मुस्कुराने लगे। फिर आप (स0अ0) ने आदेश दिया कि एक ऊंट पर जौ और दूसरे ऊंट पर खजूर लाद दिये जाएं। (हाज़ा अल हबीबः 527)

सब्र की इन्तिहा

ज़ैद बिन सिअना मदीना मुनव्वरा में एक यहूदी आलिम था। उससे आप (स0अ0) ने उधार लिया था। वह समय से पहले ही आकर मांगने लगा। आप (स0अ0) के कंधे पर जो चादर पड़ी थी वह पकड़ी और कपड़े पकड़ कर खींचने लगा और स्वर कठोर करते हुए बोलाः अब्दुल मुत्तलिब की सब औलादें ऐसे ही टाल मटोल करती हैं। हज़रत उमर (रज़ि0) ने उसको झिड़का और कठोर शब्द कहे, आप (स0अ0) ने मुस्कुराते हुए हज़रत उमर (रज़ि0) से कहा कि

ऐ उमर! मैं और यह तुम्हारी ओर से दूसरी बात के ज़्यादा ज़रूरतमन्द थे। मुझे तुम बेहतर तरीक़े पर अदा करने पर ज़ोर देते हैं और उससे बेहतर तरीक़े पर मांग करने को कहते। फिर आप (स0अ0) ने यह भी कहा कि अदा करने के समय में अभी तीन दिन बाक़ी हैं। लेकिन उनका क़र्ज़ अदा कर दिया जाए और हज़रत उमर (रज़ि0) से फ़रमाया कि तुमने उनको धमकाया और कठोर बात की इसलिए तुम्हें बीस साअ (एक साअ अर्थात लगभग तीन किलो) अधिक दिए जाएं। (सुनन बैहिक़ी कुबरा: 11066)

यही घटना उस यहूदी के इस्लाम लाने का कारण बनी। वह कहता था कि लगातार नुबूव्वत की पहचान रसूलुल्लाह (स0अ0) में देख रहा था। दो बातों का मुझे इम्तिहान लेना था। एक तो यह कि आपका सब्र बहुत बढ़ा हुआ हो और दूसरे यह कि आप के साथ जितनी ज़्यादती और जिहालत की जाए आप उतना ही सब्र और धीरज से काम लें। इस घटना से वह दोनों विशेषताएं भी मेरे सामने आ गयीं।

क्षमा व कृपा

एक बार एक देहाती आप (स0अ0) की सेवा में आया और कुछ मांगने लगा। आप (स0अ0) ने दे दिया और पूछा कि कहो मामला ठीक रहा? उसने कहा: नहीं, आपने तो बेहतर नहीं किया। मुसलमानों को इस पर गुस्सा आया वे उसकी उस ग़लती पर उसको मारने खड़े हो गए। आप

(स0अ0) ने इशारे से मना कियाः फिर घर गए और वहां उसको बुलाकर उसको और लाकर दिया और पूछा कहो, अब क्या हाल हैं? उसने कहा कि अल्लाह आपको परिवार के अनुसार बेहतर बदला अता फ़रमाए। आप (स0अ0) ने उस पर कहा कि तुमने जो बात पहले कही थी उससे मेरे साथियों के दिल में नापसंदीदगी पैदा हो गयी अब अगर तुम चाहो तो जो तुमने हमसे अब कहा वह हमारे साथियों से भी कह दो ताकि तुम पर उनकी नाराज़गी दूर हो जाए। फिर दूसरे दिन सुबह या शाम में वह आया तो रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा कि उस देहाती ने कल जो कहा था वह मैंने उसको ज़्यादा दे दिया, तो इसका ख़्याल यह है कि यह खुश हो गया। क्या वास्तव में ऐसा है, इस पर उस देहाती ने वही बात दुहरा दी कि अल्लाह आपको परिवार के एतबार से बेहतर बदला अता करे। फिर आप (स0अ0) ने कहा कि मेरी और इसकी मिसाल एक ऐसे व्यक्ति की है जिसकी ऊंटनी बिदक जाए, लोग उसको पकड़ने के लिए दौड़े तो वह और भागने लगे। ऊंटनी का मालिक कहे कि उसको छोड़ दो। मैं उसके लिए ज़्यादा नर्म भी हूँ, ज़्यादा जानता भी हूं। फिर वह धीरे से उसके सामने से आए और उसके लिए ज़मीन से कुछ चारा ले ले और उसको वापिस ले आए, बिठाए, बजाए इसके कि उस पर बैठ जाए। अगर मैं तुमको इसी तरह छोड़ देता कि उसने जो कुछ कहा उस पर उसको क़त्ल कर देते तो वह जहन्नम में जाता।

प्रेम व मुहब्बत

हज़रत जरीर (रज़ि0) बयान करते हैं कि एक दिन चाश्त के समय हम रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास बैठे हुए थे। कुछ लोग रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में उपस्थित हुए। देखने में उनकी हालत इतनी ख़राब थी कि किसी के शरीर पर पूरा कपड़ा न था। नंगे पांव, फ़ाक़ा व ग़रीबी चेहरे से दिखाई देती, तलवार लटकाए हुए, रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उन्हें देखा तो आप (स0अ0) पर बड़ा असर पड़ा। चेहरे मुबारक का रंग बदल गया। बेचैनी में आप अन्दर जाते, बाहर आते। नमाज़ का वक़्त हुआ तो हज़रत बिलाल (रज़ि0) को आदेश दिया। नमाज़ के बाद रसूलुल्लाह (स0अ0) ने भाषण दिया और सभी मुसलमानों का उनकी ग़रीबी की ओर ध्यान दिलाया। थोड़ी देर में ढेर लग गए। एक कपड़े का, एक खाने का, आप (स0अ0) ने देखा तो खुशी से चेहरा दमकने लगा। (नसाईः 2555)

कृपा का प्रदर्शन

रसूलुल्लाह (स0अ0) की एक-एक अदा कृपा का प्रदर्शन है। एक दुआ आप (स0अ0) ने ऐसी फ़रमायी जिससे आप (स0अ0) की इन्तिहाई मुहब्बत व प्रेम टपकता हैः "ऐ अल्लाह! मैं एक इनसान ही हूं, जैसे सब गुस्सा होते हैं तो मैं भी हो जाता हूं, इसलिए जिन मोमिन मर्द-औरत के हक़ में मैंने बद्दुआ की हो तो उसको अपने पास उसके लिए पवित्रता का साधन बनाना।" (मुसनद अहमदः 24991)

अत्यधिक नर्मी

एक बार आप (स0अ0) मस्जिद–ए–नबवी में थे, सहाबा किराम (रज़ि0) भी बैठे थे। अचानक एक देहाती आकर मस्जिद में पेशाब करने लगा। सहाबा पकड़ने को दौड़े तो आप (स0अ0) ने रोका और कहाः इस तरह अचानक पकड़ोगे तो उसको तकलीफ़ हो जाएगी। जब वह फ़ारिग़ हो गया तो वह स्वयं कहता है कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने न मुझे मारा, न झिड़का, न कठोर शब्द कहे, सिर्फ़ इतना कहा कि इस तरह के काम यहां पर ठीक नहीं। यह मस्जिदें तो ज़िक्र, तिलावत व तस्बीह इत्यादि के लिए होती हैं। (मुस्लिमः285)

अक्सर ऐसा होता है कि किसी के बारे में आप (स0अ0) को किसी अनुचित काम की ख़बर मिलती तो आप सीधे उससे न कहते बल्कि नमाज़ के बाद इस तरह के शब्दों में कहतेः

"लोगों को क्या हो गया है कि वे ऐसे–ऐसे काम करते हैं।" (अबूदाऊदः 4788)

एक बार सभा में एक साहब आए, उनके कपड़ों पर कुछ गेरूवा रंग था। जब वे चले गए तो आप (स0अ0) ने कहा कि कोई उनसे कह दे कि वे अपने कपड़े धो लें। (अबूदाऊदः 4789)

इस समय तुम्हें कौन बचा सकता है?

एक बार जब आप (स0अ0) ग़ज़वा–ए–ज़ातुर्रिक़ाअ (ज़ातुर्रिक़ाअ के युद्ध) से वापिस आ रहे थे तो रास्ते में दोपहर का समय हुआ। धूप तेज़ थी, सभी लोग अलग–अलग पेड़ों के नीचे आराम करने के लिए लेट गए। आप (स0अ0) भी एक पेड़ के नीचे आराम करने लगे और अपनी तलवार पेड़ पर लटका दी। एक व्यक्ति आया और उसने तलवार उठा ली, रसूलुल्लाह (स0अ0) का कथन है कि जब मेरी आंख खुली तो यह तलवार उठाए हुए था। उसने मुझसे कहा: इस वक़्त तुम्हें कौन बचा सकता है? रसूलुल्लाह (स0अ0) ने बलपूर्वक कहा: अल्लाह, तो उस पर दहशत छा गयी, तलवार उसके हाथ से छूट गयी, आप (स0अ0) ने तलवार उठा ली और उसको कोई सज़ा नहीं दी। (बुख़ारी: 2913)

लोगों का अत्यधिक ध्यान रखना

मुसलमानों के लिए आप बहुत ही दयालु व मेहरबान थे और उनके हालात की बहुत चिन्ता करते थे। मनुष्य का स्वभाव है कि उकताहट और सामयिक रूप से साहस क्षीण होता रहता है। आप (स0अ0) इसका बराबर ध्यान रखते थे। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) हमको जो बयान व नसीहत करते व अन्तराल के साथ होती थी, इस ख़्याल से कि कहीं हमारे अन्दर उकताहट न पैदा होने लगे। (सुनन तिरमिज़ी: 2855)

"रसूलुल्लाह (स0अ0) मुसलमानों के लिए एक हमदर्द बाप की तरह थे। सारे मुसलमान आप (स0अ0) के साथ इस प्रकार थे जैसे वे सब आप (स0अ0) के परिवार में शामिल हों और उन सब की ज़िम्मेदारी रसूलुल्लाह (स0अ0) पर हो। आप (स0अ0) उन पर इतने मेहरबान थे और उनसे इतना संबंध था, जैसे मां को अपने गोद के बच्चे से होता है। मुसलमानों के पास माल व दौलत और उनके रिज़्क़ में जो बढ़ोत्तरी अल्लाह तआला ने फ़रमायी थी, उससे तो आप (स0अ0) को कोई लेना–देना नहीं था, लेकिन उनके क़र्ज़ों और उनके बोझ को हल्का करना, आप (स0अ0) ने अपने ज़िम्मे ले लिया था। आप (स0अ0) फ़रमाते थे, जिसने विरासत में माल छोड़ा वह उसके वारिसों का है। कुछ क़र्ज़ा इत्यादि बाक़ी है तो वह हमारे ज़िम्मे है। एक दूसरी रिवायत में है कि आप (स0अ0) ने फ़रमाया: कोई मोमिन ऐसा नहीं जिसका मुझसे ज़्यादा दुनिया व आख़िरत में कोई वली हो। अगर चाहो तो यह आयत पढ़ो:

﴿النَّبِيُّ أَوْلَى بِالْمُؤْمِنِينَ مِنْ أَنفُسِهِمْ﴾

"नबी मुसलमानों के लिए उनकी जानों से ज़्यादा दोस्त और हमदर्द हैं।" (अलएहज़ाब: 6)

इसलिए जिस मुसलमान का इन्तिक़ाल हो और वह कुछ माल छोड़े तो वह उसके वारिस, क़रीबी रिश्तेदारों का हक़ है। वे जो भी हों, यदि उसके ज़िम्मे कुछ कर्ज़ या

ज़मीन जाएदाद रह जाए, तो मेरे पास आए उसका वाली और ज़िम्मेदार मैं हूं।" (नबी–ए–रहमत: 591–592)

हज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि0) बयान करते हैं कि:

"रसूलुल्लाह (स0अ0) बहुत रहमदिल थे। आप (स0अ0) के पास कोई ज़रूरतमन्द आता तो आप (स0अ0) उससे वादा ज़रूर करते और यदि कुछ होता तो उसी समय उसकी ज़रूरत पूरी करते। एक बार नमाज़ खड़ी हो चुकी थी कि एक देहाती आगे बढ़ा और आप का कपड़ा पकड़ कर कहने लगा, मेरी एक मामूली सी ज़रूरी बात रह गयी है, मुझे डर है कहीं भूल न जाऊं, आप (स0अ0) उसके साथ गए, जब उसने अपने काम कर लिया तो आप (स0अ0) आए और नमाज़ अदा की।"

आपके सब्र, बर्दाश्त करने की क्षमता, खुला दिल और धैर्य व महानता की घटनाओं में रसूलुल्लाह (स0अ0) के सेवक हज़रत अनस (रज़ि0) की वह शहादत है, जो उन्होंने इस सिलसिले में दी है। उस समय वे बहुत कमउम्र थे। उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह (स0अ0) की दस साल सेवा की। आप (स0अ0) ने कभी "उंह" भी नहीं किया और न यह कहा कि अमुक काम तुमने क्यों किया और अमुक काम तुमने क्यों नहीं किया।"? (नबी–ए–रहमत: 605–606)

रहमत का दीन

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह (स0अ0) के द्वारा मानव संसार को दीन व शरीअत (धर्म व व्यवस्था) दी है वह भी कृपा का सम्पूर्ण नमूना है। पिछली क़ौमों को जो शिक्षाएं दी गयीं थीं उनमें से बहुत से शरई आदेश इतने कठिन थे कि उन पर इस उम्मत के लिए अमल करना आसान नहीं था। पुराने ज़माने में लोग बड़ी डील–डौल और ताक़तवर शरीर रखने वाले होते थे किन्तु यह दीन क़यामत तक के लिए है और सम्पूर्ण मानवता के लिए है। इसमें इस बात की आवश्यकता थी कि लोगों की ताक़त और उनकी शारीरिक बनावट का ध्यान रखा जाए। अल्लाह तआला ने क़ुरआन मजीद में इसका वर्णन भी किया है:

﴿لاَ يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا إِلاَّ وُسْعَهَا﴾

"अल्लाह तआला किसी को ताक़त से ज़्यादा का ज़िम्मेदार नहीं बनाता।" (सूरह बक़रा: 286)

अल्लाह तआला ने अपने आख़िरी नबी को सम्पूर्ण कृपा का नमूना बनाया। संसारों के लिए रहमत बनाया और उनके द्वारा दी गयी आख़िरी शरीअत की व्यवस्था को पूर्ण

रूप से कृपा बनाया। इसीलिए अल्लाह के नबी का इरशाद है:

"यह दीन आसान है और जो भी दीन से ज़ोरआज़माई करेगा तो दीन उस पर ग़ालिब आ जाएगा तो बीच की राह अपनाओ और क़रीब से क़रीब रहने की कोशिश करो और खुशख़बरी कुबूल करो, आसानी पैदा करो और सुबह व शाम और कुछ रात के हिस्से में अमल करके मदद चाहो।"

(सुनन नसाई: 5038)

यह शिक्षाएं सम्पूर्ण रहमत हैं। अक़ीदा (आस्था) हो या इबादत, मामलात हों या सामाजिकता हर जगह रहमत के जलवे नज़र आते हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0) को जब भी मालूम हुआ कि कोई अपने ऊपर सख़्ती करना चाहता है तो आप (स0अ0) ने उसे मना कर दिया। एक बार मस्जिद–ए–नबवी में रसूलुल्लाह (स0अ0) ने एक रस्सी बंधी हुई देखी और पूछा तो बताया गया कि यह हज़रत ज़ैनब (रज़ि0) की है जब वे नमाज़ पढ़ते–पढ़ते थक जाती हैं तो उस पर टेक लगा लेती हैं। आप (स0अ0) ने कहा कि इसको खोल कर फेंक दो। तुममें से जब कोई थक जाए तो आराम करना चाहिए और जब तक ताक़त बाक़ी रहे इबादत करनी चाहिए। (सही बुख़ारी: 1150)

एक बार तीन सहाबा (रज़ि0) के बारे में आप (स0अ0) को मालूम हुआ कि उनमें से एक ने कहा कि मैं रात भर नमाज़ पढ़ूंगा, दूसरे ने कहा कि मैं दिन भर रोज़े रखूंगा, तीसरे ने कहा कि मैं कभी शादी नहीं करूंगा। आप

(स0अ0) उन पर नाराज़ हुए और कहा कि मैं तुममें सबसे अधिक तक़्वा रखने वाला हूं, मैं भी सोता हूं, जागता भी हूं, रोज़ा भी रखता हूं, इफ़्तार भी करता हूं और मैंने शादियां भी की हैं। (बुख़ारीः 5063)

एक सहाबी ने रसूलुल्लाह (स0अ0) से लगातार रोज़े रखने की इजाज़त चाही। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा कि सौम–ए–दाऊदी (दाऊद अलै0 की भांति रोज़ा रखना) रखो, हज़रत दाऊद (अलै0) का नियम था कि एक दिन रोज़ा रखते थे और एक दिन इफ़्तार करते थे। (बुख़ारीः 1977)

रसूलुल्लाह (स0अ0) जब किसी को दावत के लिए भेजते तो कहते कि "आसानी पैदा करो, तंगी मत करो, बशारत की बात कहो, नफ़रत मत पैदा करो।"

(बुख़ारीः 3038)

आपकी रहमत की शिक्षाएं जीवन के हर भाग को अपने अन्दर लिए हुए नज़र आती हैं। जीवन का कोई भाग ऐसा नहीं है कि उसमें रहमत न दिखाई दे।

अक़ीदा (आस्था)

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने जो मूलभूत अक़ीदा उम्मत के सामने रखा है वह भी कृपा स्वयं में कृपा का सम्पूर्ण रूप हैं। अल्लाह की वहदानियत (एकेशेवरवाद) उस कृपा का सबसे बड़ा प्रदर्शन है। मानवता न जाने कहां–कहां ठोकर खाती फिर रही थी। कोई किसी पत्थर के आगे सर रख रहा था तो कोई किसी पेड़ को पूज रहा था। माबूदों

(उपासकों) की अधिकता ने ऐसा दिमाग़ी बिखराव पैदा कर दिया कि उसने इनसानो का सुकून छीन लिया था। अल्लाह के रसूल (स0अ0) इन तंग व संकरी गलियों से निकाल कर तौहीद के अक़ीदे (एकेशेवरवाद की आस्था) की ऐसी वृहदता प्रदान की कि दिल व दिमाग़ प्रकाशित हो गए और उनको ऐसी ऊर्जा प्राप्त हुई कि इनसान को दुनिया में जीने का मज़ा मिला।

जाहिलियत के ज़माने में शिर्क करने वाले अपने खुद के बनाए हुए एवं खुद के तराशे हुए बुतों को लिए फिरते थे। सफ़र करने में उनको साथ रखना पड़ता है या इसके लिए ख़ास जगह पर जाना आवश्यक था। बुतों तक पहुंचने के लिए न जाने क्या–क्या जतन करने पड़ते थे और फिर भी वे वास्तविक उपासक से दूर थे। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इनसानों को उनके बनाने वाले से मिला दिया और हाज़िरी की ऐसी लज़्ज़त (स्वाद) दी कि बन्दा कहीं भी हो वह सफ़र में हो या घर में, दिन की रोशनी में हो या रात के अंधेरे में, लोगों की भीड़ में हो या अकेले में, वह कहीं भी और किसी भी हाल में हो अपने रब से उसका संबंध जुड़ा हुआ है। वह जब भी चाहे अपने मालिक से फ़रियाद कर सकता है और अपनी ज़रूरतें उसके सामने रख सकता है। वास्तव में यह तौहीद का अक़ीदा पूरी तरह से रहमत का अक़ीदा है।

फिर रसूलुल्लााह (स0अ0) का आख़िरी नबी होना इनसानो के लिए कितनी बड़ी रहमत है कि अब न किसी

आने वाले का इन्तिज़ार करना है और न किसी दावा करने वाले को परखना है। रिसालत के ख़ात्मे से ही शरीअत का ख़ात्मा भी जुड़ा हुआ है। अब इस शरीअत में भी किसी प्रकार के बदलाव की संभावना नहीं है। इसी पर चलना है, हर तरह के बेचैनी व परेशानी से बचाने का यह एक ऐसा तरीक़ा है, जिसको ख़त्म–ए–नुबूव्वत कहते हैं।

फिर आख़िरत के अक़ीदे (परलोक की आस्था) को जिस साफ़–सुथरे और दो टूक अंदाज़ में रसूलुलाह (स0अ0) ने बयान कर दिया उससे एक बन्दा अपनी ज़िन्दगी को रोशन कर सकता है और इसके हर वक़्त के ध्यान से अपने रुख़ को ठीक कर सकता है। इसमें न दिमाग़ को उलझाने की ज़रूरत है, न अपनी क्षमता को इसमें नष्ट करने की आवश्यकता है कि मरने के बाद क्या होगा, वे सारी वास्तविकताएं और उसकी व्याख्या रसूलुल्लाह (स0अ0) ने बता दी है।

फिर अल्लाह की उतारी हुई पूर्ण कृपालु किताब, उसकी शिक्षाएं और उसके वे फ़रिश्ते जो अल्लाह के नेक बन्दों के लिए हर समय दुआ करते हैं और उनमें एक संख्यां उसी में लगी हुई है कि वह ईमान वालों के लिए दुआ करती है और फिर तक़दीर पर आस्था एक इनसान के लिए कितने सुकून का साधन है कि सब कुछ अल्लाह की ओर से है। जो होता है सब अल्लाह की तरफ़ से होता है। समर्पण की यह आस्था कितना सुकून देती है। निसंदेह यह आस्थाएं अपने अन्दर कृपा का ऐसा भाव रखती हैं कि

उनसे रसूलुल्लाह (स0अ0) की रहमत से परिपूर्ण शिक्षाओं का आरम्भ होता है।

नमाज़

अक़ीदे के बाद इस्लाम के चार कार्य हैं, जिन पर इस्लाम की इमारत स्थापित होती है। उनमें सबसे पहला कार्य नमाज़ है जो मोमिन के लिए अल्लाह का तोहफ़ा है। मेराज के अवसर पर रसूलुल्लाह (स0अ0) के द्वारा यह ईमान वालों को मिला। अल्लाह ने आप (स0अ0) को रूहानी व जिस्मानी (आत्मिक व शारीरिक) मेराज करवायी। तो इस रहमत के नबी के तुफ़ैल में सभी ईमान वालों को नमाज़ के द्वारा रूहानी मेराज का तोहफ़ा अता किया कि बन्दा इसमें अपने रब के इतना क़रीब होता है कि दिल में एक ठण्डक और दिमाग़ में ख़ुशी महसूस करता है और जिसका ईमान जितना ताक़तवर होता है उसको नमाज़ में अल्लाह की उतनी ही निकटता प्राप्त होती है। आप (स0अ0) ने इसको अपनी आंखों की ठण्डक कहा है। मगर यह भी रसूलुल्लाह (स0अ0) का कृपा है कि आप (स0अ0) ने लोगों का ध्यान रखने का इसमें भी आदेश दिया है, इरशाद होता है:

"तुममें जो भी नमाज़ पढ़ाए उसे चाहिए कि वह नमाज़ हल्की पढ़ाए, इसलिए कि तुममें बच्चे भी हैं, बड़े भी हैं, कमज़ोर भी हैं, मरीज़ भी हैं।" (सुनन तिरमिज़ी: 236)

एक ओर नमाज़ रूह के लिए पूरी तरह से रहमत है तो दूसरी ओर उसमें ऐसे तरीक़े भी बता दिए गए हैं कि किसी को शारीरिक रूप से भी परेशानी का बोझ न उठाना पड़े। खुद रसूलुल्लाह (स0अ0) इरशाद फ़रमाते हैं कि नमाज़ पढ़ाता हूं और बच्चों के रोने की आवाज़ सुन लेता हूं तो इस ख़्याल से नमाज़ को छोटा कर देता हूं कि माँ को इसमें परेशानी होगी। (सही बुख़ारीः 707)

एक बार एक साहब ने शिकायत की कि हमारे इमाम साहब बहुत लम्बी क़िराअत करते हैं और हम किसान लोग थके मांदे होते हैं। आप (स0अ0) ने इमाम साहब को बुलवा कर टिप्पणी की और कहाः

"क्या तुम चाहते हो कि लोग फ़ित्ने में पड़ जाएं।"

(सही मुस्लिमः 465)

एक बार आप (स0अ0) ने फ़रमायाः

"यदि मुझे यह ख़्याल नहीं होता कि उम्मत परेशानी में पड़ जाएगी तो उनको हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक का आदेश देता और इशा की नमाज़ को रात के तिहाई हिस्से तक टाल देता।" (सुनन तिरमिज़ीः 23)

नमाज़ के समय भी ऐसे रखे गए जो मनुष्य की आवश्यकता के अनुकूल हैं। उनमें उनकी पूरी छूट विद्यमान है। दिन में फ़ज्र के बाद ज़ोहर तक लम्बा समय जो विशेषतयः काम का समय होता है, अवकाश का दिया गया ताकि आदमी काम में बाधा न महसूस करे। इसी तरह इशा और फ़ज्र के बीच लम्बा समय है जो आराम के लिए तय

किया गया है और अल्लाह ने इसको आराम के लिए बनाया है।

नमाज़ों की यह सारा क्रम मनुष्य के स्वभाव व आवश्यकता के अनुकूल है। यह सब आप (स0अ0) की कृपालु शिक्षाओं का लाभ है जो अल्लाह तआला ने आप (स0अ0) के द्वारा उम्मत को दिया है।

ज़कात

इस्लाम का दूसरा स्तम्भ ज़कात है। इसमें अमीर व ग़रीब, राजा व फ़क़ीर दोनों का किस हद तक ख़्याल रखा गया है और दोनों के लिए ऐसे नियम बनाए गए हैं कि ज़रूरतमन्द की ज़रूरत भी पूरी हो लेकिन देने वाले पर बोझ भी न पड़े। साल में एक बार केवल ढ़ाई प्रतिशत माल से ज़कात फ़र्ज़ की गयी है जो उसकी अस्ल ज़रूरत से अलग हो। न घर पर ज़कात है, न सवारी पर, न कारख़ाने पर, न दुकान पर, ज़कात उस माल पर है जो कारख़ाने में तैयार होता है या दुकान में बिकता है या जमा करके रखा जाता है। इस प्रकार यह एक अन्तर्राष्ट्रीय सरकुलेशन है जो पूरी आर्थिक व्यवस्था ठीक करता है और दिलों में इनसानी हमदर्दी और रहमत के भाव को उभारता है और भलाई पर आमादा करता है।

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने आदेश दिया कि ज़कात वसूल करने वालों को चाहिए कि वे जब जानवर की ज़कात वसूल करें तो अच्छे–अच्छे जानवर न छांट ले, बल्कि

संतुलन से काम लें और आप (स0अ0) ने इसका भी आदेश दिया कि ज़कात जहां से भी ली जाए वहीं से ग़रीबों और ज़रूरतमन्दों को बांट दी जाए। (अबूदाऊदः 1584)

यही इसकी बेहतरीन सूरत है और आप (स0अ0) की यह शिक्षा अत्यधिक कृपा का प्रदर्शन है कि यदि ज़कात व सदक़ा अपने ही क़रीबी लोगों को दे दिया जाए जिनकी पालन–पोषण व परवरिश उसके ज़िम्मे नहीं है तो इसमें दोहरा सवाब है। एक सदक़े का और दूसरा रिश्तेदारी का। (बुख़ारीः 1466)

हदीसों में आप (स0अ0) ने सदक़ा व ख़ैरात की बड़े फ़ायदे बयान किये हैं लेकिन इसके साथ ही यह भी कहा है कि अपने घर–बार का भी ध्यान रखो। एक बार एक सहाबी ने चाहा कि अपना सब माल सदक़ा कर दें तो आप (स0अ0) ने स्वीकार न किया और केवल एक तिहाई माल सदक़ा करने की आज्ञा दी और कहा किः

"तुम अपने परिवार की आवश्यकता पूरी करके जाओ यह उससे बेहतर है कि तुम उनको मोहताज छोड़कर जाओ और वे दर–दर ठोकरें खाने पर मजबूर हों और दूसरों के सामने हाथ फैलाएं।" (बुख़ारीः 1295)

सदक़े व ख़ैरात के बारे में यह भी आदेश दिया गया कि ख़ैरात करने वाला सदक़े व ख़ैरात को केवल अल्लाह का करम समझे वह इसको किसी पर एहसान करना न समझे और यदि कोई एहसान जतलाता है तो वह अपना सब काम बेकार कर रहा है। हदीस में आता है कि अल्लाह

तआला एहसान जताने वाले की ओर क़यामत में निगाह भी न करेगा। (सुनन तिरमिज़ीः 1211)

और कुरआन मजीद में फ़रमाया गयाः

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ لاَ تُبْطِلُواْ صَدَقَاتِكُم بِالْمَنِّ وَالأذَى﴾

"ऐ ईमान वालो! एहसान जतलाकर और तकलीफ़ पहुंचाकर अपनी ख़ैरात को बर्बाद मत करो।"

(सूरह बक़रहः 264)

ज़कात व सदक़े के बारे में यह रसूलुल्लाह (स0अ0) की शिक्षाएं हैं जिन पर यदि अमल किया जाए तो दुनिया का कोई भी फ़क़ीर फ़क़ीर न रहे और दुनिया का अत्यधिक अंसतुलित, अस्थिर अर्थव्यवस्था ऐसी सदृढ़ हो जाए जिसकी मनुष्य को आवश्यकता है।

रोज़ा

रोज़ा जहन्नम से ढ़ाल है, शैतान से हिफ़ाज़त का साधन है। (बुख़ारीः 1904)

अल्लाह तआला ने इसको अपने बन्दों के लिए रहमत बनाया है। रसूलुल्लाह (स0अ0) इसका बड़ा एहतिमाम करते थे और ख़ूब नफ़िल रोज़े रखते थे। यहां तक कि कभी-कभी रसूलुल्लाह (स0अ0) दिन-रात का रोज़ा रखते, न दिन को इफ़्तार करते, न रात को इफ़्तार करते। सहाबा ने आप (स0अ0) से इसकी आज्ञा चाही तो आप (स0अ0) ने मना कर दिया। यह आप (स0अ0) की रहमत थी कि स्वयं आप (स0अ0) रोज़े पर रोज़ा रख रहे हैं लेकिन दूसरों को

इससे मना कर रहे हैं कि वे उसको बर्दाश्त न कर सकेंगे और यह उनकी तसल्ली के लिए फ़रमा रहे हैं कि मैं तो इसलिए रखता हूं कि मेरा रब मुझे खिलाता–पिलाता है।

(सही मुस्लिमः 1102)

सहरी में देरी और इफ़्तार में जल्दी करने को आप (स0अ0) ने इबादत घोषित कर दिया।

(सही मुस्लिमः 1099)

बन्दगी का मज़हर (प्रदर्शन) बना दिया कि लोग सहरी में जल्दी करने और इफ़्तार में देर करने को बेहतर समझकर कहीं परेशानी में न पड़ जाएं और यह यक़ीनन आप (स0अ0) की रहमत व शफ़क़त की इन्तिहा है कि आप (स0अ0) ने इसीलिए तरावीह की पाबन्दी नहीं की कि कहीं मेरी उम्मत पर फ़र्ज़ न हो जाए।

<u>हज</u>

हज इस्लाम का बहुत ही शान वाला कार्य है। जिसमें बन्दा अपनी बन्दगी का भरपूर प्रदर्शन करता है और जिस तरह राजा व फ़क़ीर नमाज़ में एक ही सफ़ में खड़े हो जाते हैं उसी तरह हज में सब अमीर व ग़रीब एक लिबास में नज़र आते हैं। अमीरी व ग़रीबी का फ़र्क़ मिट जाता है। सब अपने मालिक के दरबार में एक हैं।

तेरे दरबार में पहुंचे तो सभी एक हुए

अल्लाह के घर की हाज़िरी बन्दों पर अल्लाह की विशेष कृपा है। हज़रत इब्राहीम (अलै0) ने इसका निर्माण

किया। हज की आवाज़ लगायी और रसूलुल्लाह (स0अ0) ने दुनिया के लोगों को इस ओर आकर्षित किया, फिर क्या था:

﴿وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ مِن كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ﴾

"और ऐसी दुबली-पतली ऊंटनियों पर भी आएंगे जो हर दूर दराज़ के रास्तों से चली आती होंगी।" (हजः 28)

और कुरआन की इस आयत का समा बंध गया।

आख़िरी हज के मौक़े पर विभिन्न लोग आते थे और रसूलुल्लाह (स0अ0) से समस्याओं का हल पूछते थे। आप (स0अ0) की रहमत व शफ़क़त का कमाल था कि आप (स0अ0) सबकी दिलजोई करते थे। न किसी को डांटते, न किसी को झिड़कते, यद्यपि समस्या का समाधान बता देते कि आगे ऐसी ग़लती न हो।

तवाफ़ में जब रसूलुल्लाह (स0अ0) हजर-ए-असवद के सामने तशरीफ़ लाए तब इशारे से चूमते थे। आप चाहते तो क्या मुश्किल था कि प्रत्यक्ष रूप से चूमते, लेकिन क़ुर्बान जाइये रहमत-ए-दो आलम की एक-एक अदा पर केवल इस ख़्याल से कि फिर लोग इसी पर टूट पड़ेंगे और यह चीज़ तकलीफ़ का ज़रिया बनेगी इसलिए आप (स0अ0) ने ख़ुद बोसा नहीं लिया बल्कि इशारे से ही चूमने को पर्याप्त समझा ताकि लोग चूमने की ज़िद न करें।

मक्का विजय के अवसर पर रसूलुल्लाह (स0अ0) काबे के अन्दर गए थे लेकिन आख़िरी हज के अवसर पर आप

(स0अ0) केवल इसलिए अन्दर नहीं गए कि लोग इसको हज का एक हिस्सा समझ लेंगे और फिर कठिनाई होगी।

अरफ़ात के भाषण की कुछ झलकियां

रसूलुल्लाह (स0अ0) की हर अदा उम्मत के लिए प्रेम व कृपा से परिपूर्ण थी। आख़िरी हज के अवसर पर आप (स0अ0) ने जो भाषण दिया वह भी कृपा की पराकाष्ठा का श्रेष्ठ नमूना है। अल्लामा शिबली नोमानी रह0 अपने तरीक़े से लिखते हैं:

"अरफ़ा में हाजियों का ठहरना हज़रत इब्राहीम (अलै0) की यादगार है और उन ही ने उस जगह को इस विशेष कार्य के लिए वहां तय किया है। अरफ़ात में एक जगह नमरह है। वहां आप (स0अ0) ने एक कम्बल के खेमे में क़याम किया। दोपहर ढ़ल गयी, तो ऊंटनी पर (जिसका नाम क़ुस्वा था) सवार होकर मैदान में आए तो ऊंटनी पर ही से भाषण दिया।"

(आज पहला दिन था कि इस्लाम अपने जाह व जलाल के साथ प्रकट हुआ और जाहिलियत की सभी बेहूदा रस्मों को मिटा दिया गया। इसीलिए आप (स0अ0) ने फ़रमाया, "हां, जाहिलियत की सभी रस्में मेरे दोनों पांव के नीचे हैं।") (सही मुस्लिमः 1218)

मनुष्य की सम्पूर्णता की प्राप्ति में सबसे बड़ा रोड़ा आपसी भेदभाव था। जो दुनिया की क़ौमों ने, सभी धर्मों ने, सभी देशों ने, विभिन्न रूपों में स्थापित कर रखा था।

बादशाह दैवीय छाया थे, जिनके आगे किसी को भी ज़रा सी भी आवाज़ करने की आज्ञा न थी। धर्मों के इमामों के साथ कोई व्यक्ति धार्मिक मामलों में बातचीत करने का अधिकारी न था। शरीफ़ लोग रज़ीलों (नीच) से एक श्रेष्ठ प्राणी थे। गुलाम आक़ा के बराबर नहीं हो सकते थे। आज यह सारे फ़र्क़, यह सभी अन्तर, यह सारी क़ैद टूट गयीं।

"लोगों! बेशक तुम्हारा रब एक है, और बेशक तुम्हारा बाप एक है। हाँ अरबी (आर्य) को अजमी (द्रविड़) पर, अजमी को अरबी पर, गोरे को काले पर और काले को गोरे पर कोई श्रेष्ठता नहीं किन्तु तक़वे के कारण से।"

(मुसनद अहमदः 24204)

"हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है और मुसलमान आपस में भाई–भाई हैं।" (मुस्तदरक हाकिमः 318)

"तुम्हारे गुलाम, तुम्हारे गुलाम!! जो खुद खाओ वही उनको खिलाओ, जो खुद पहनो वही उनको पहनाओ।"

(इब्ने साद किस्म अव्वल जुज़ सानीः 133)

अरब में किसी ख़ानदान का कोई व्यक्ति किसी के हाथ से मारा जाता, तो उसका बदला लेना ख़ानदान का कर्तव्य हो जाता था। यहां तक कि सैंकड़ो बरस बीत जाने पर भी यह फ़र्ज़ बाक़ी रहता था और इसी आधार पर लड़ाइयों का एक न समाप्त होने वाला क्रम स्थापित हो जाता था और अरब की धरती हमेशा ख़ून से लाल रहती। आज यह सब पुरानी रस्में, अरब का सबसे पुराना गर्व,

ख़ानदान पर गर्व करने की यह रस्म मिटायी जाती है (और इसके लिए नुबूव्वत का मुनादी सबसे पहले खुद अपना नमूना पेश करता है):

"जाहिलियत के सभी ख़ूनों (यानि बदले के ख़ून) बातिल (निषेध) कर दिए गए, और सबसे पहले मैं (अपने ख़ानदान का ख़ून, रबिया बिन हारिस के बेटे का ख़ून बातिल कर देता हूं।" (सुनन अबी दाऊदः 1905)

पूरे अरब में ब्याज के कारोबार का एक जाल फैला हुआ था। जिसमें अरब का रेशा-रेशा जकड़ा हुआ था और हमेशा के लिए वे अपने क़र्ज़ देने वालों के गुलाम बन गए थे। आज वह दिन है कि उस जाल का एक-एक तार अलग होता है। इस काम को पूरा करने के लिए भी सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान को पेश करता हूं:

"जाहिलियत के सभी ब्याज भी माफ़ कर दिए गए और सबसे पहले मैं अपने ख़ानदान का ब्याज अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब का ब्याज माफ़ करता हूं।"

(सही मुस्लिमः 3009)

आज तक औरतें एक चल सम्पत्तिक की भांति थीं, जो जुवे तथा सट्टे में दांव पर चढ़ायी जा सकती थीं, आज पहला दिन है कि यह गिरोह पीड़ित है। यह कोमल एवं निर्मल काया महत्व का ताज पहनती है:

"औरतों के मामलों में खुदा से डरो।"

(सही मुस्लिमः 3009)

अरब में जान व माल की कुछ क़ीमत न थी। जो आदमी चाहता था क़त्ल कर देता था और जिसका माल चाहता था छीन लेता था (आज अमन व सलामती का बादशाह पूरी दुनिया को सुहल का संदेश सुनाता है)

"तुम्हारा ख़ून तुम्हारा माल क़यामत तक उसी तरह हराम है जिस तरह यह दिन इस महीने में और इस शहर में हराम है।" (बुख़ारी: 1741)

जितने भी आदेश आप (स0अ0) ने उम्मत को दिए उन सब में इसका ख़्याल रखा गया है कि उम्मत मुश्किल में न पड़ जाए। लेकिन उसी के साथ उम्मत की चिन्ता व तड़प और उसकी मुक्ति के लिए लगातार दुआ व मुनाजात आप (स0अ0) की उम्मत पर अत्यधिक कृपा व प्रेम का प्रदर्शन है। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया:

﴿لَقَدْ جَاءَكُمْ رَسُولٌ مِّنْ أَنفُسِكُمْ عَزِيزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيصٌ عَلَيْكُم بِالْمُؤْمِنِينَ رَءُوفٌ رَّحِيمٌ﴾

"निःसंदेह तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आ चुके, तुम्हारी तकलीफ़ जिनको बहुत सख़्त गुज़रती है, तुम्हारी (भलाई) के बहुत इच्छुक हैं ईमान वालों के लिए तो बड़े शफ़ीक़ बहुत मेहरबान हैं।" (सूरह तौबा: 128)

मामलात

इस्लाम का निज़ाम–ए–मामलात व अर्थव्यवस्था भी रसूलुल्लाह (स0अ0) की सम्पूर्ण कृपालु का दिया हुआ है। क़ुरआन के उसूल की रोशनी में अल्लाह के हुक्म से

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उसकी नोक–पलक को ऐसा ठीक किया है कि बजाए ख़ुद यह व्यवस्था मानवता के लिए कृपा का भण्डार है। इस व्यवस्था में कमज़ोरो को उनके अधिकार बताए गए हैं। ताक़तवर का ध्यान उसकी ज़िम्मेदारी की ओर दिलाया गया है। ब्याज, लूटमार, चोरी, रिश्वत, जुआ और उसके जैसी सारी चीज़ें हराम घोषित कर दी गयीं जो मानवता के लिए नासूर हैं और जिनसे इस्लाम की न्याय व्यवस्था पर चोट पड़ती है और कमज़ोरों को दबाया जाता है। उनके अधिकारों का हनन किया जाता है और जिसके परिणाम में मानव जीवन में ऐसी असंतुलन पैदा हो जाता है कि उनको बराबर करना मुश्किल हो जाता है।

दुनिया की पूंजीवादी व्यवस्था में ब्याज एक कैंसर की तरह है। जिसके परिणाम में न जाने कितने इनसान आत्महत्या पर मजबूर होते हैं। एक अमीर आदमी अपनी दौलत के द्वारा कमज़ोरो और ग़रीबों को चूसता है और उनको कंगाल करके छोड़ता है। लोग भी इसका शिकार होते हैं और देशों को भी उस शिकंजे में जकड़ा जाता है। इस्लाम की कृपालु व न्यायिक व्यवस्था जो अन्तिम संदेष्टा (स0अ0) के द्वारा दी गयी, वह इसको कहां बर्दाश्त कर सकती थी। यही कारण है कि इस्लाम ने पूंजीवादी व्यवस्था पर सबसे बढ़कर जो चोट लगायी है वह ब्याज पर लगायी है और इरशाद होता है कि:

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ وَذَرُواْ مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبَا إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ. فَإِن لَّمْ تَفْعَلُواْ فَأْذَنُواْ بِحَرْبٍ مِّنَ اللّهِ وَرَسُولِهِ﴾

"ऐ ईमान वालो! अल्लाह से डरो और जो ब्याज बाक़ी रह गया है उसको छोड़ दो अगर तुम ईमान रखते हो और अगर तुम ऐसा नहीं करते तो अल्लाह और उसके रसूल की ओर से जंग के लिए तैयार हो जाओ।"

(सूरह बक़रह: 278–279)

इनसानी हमदर्दी और मेहरबानी के आधार पर क़र्ज़ देने की श्रेष्ठता बयान की गयी है और इस पर मुआवज़े को हराम घोषित कर दिया गया है ताकि दिलों में रहमत व लगाव की भावना परवान चढ़ें और इनसान हमेशा व्यापारिक सोच ही न रखे बल्कि उसके अन्दर मानवता और त्याग की विशेषता रंग लाए और समाज हैवानी समाज न हो बल्कि वह इनसानी समाज का नमूना बन सके।

कृपा के भाव को बाक़ी रखने के लिए इस्लाम ने ऐसे नियम भी बना दिए हैं कि उसके बाद आपसी झगड़े व फूट की संभावना कम से कम हो जाती हैं और आपस की मुहब्बतें बनी रहती हैं। एक जगह इरशाद हुआ कि:

"जो ज़मानत लेता है फ़ायदा भी उसी का होता है।"

(अबूदाऊद: 3510)

यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण नियम है, मामलों और आपसी कारोबार का। इस नियम के परिणाम में बहुत सी छोटी–छोटी बातें साफ़ हो जाती हैं और फिर झगड़ों से

मुक्ति मिल जाती है। इसी से मिलता–जुलता नियम यह भी है कि:

"जो मेहनत करेगा नफ़ा उसका होगा।"

(अलमबसूत लिल सरख़ुसी: 144/1)

कुरआन मजीद में यह आदेश दिया गया है कि जब कारोबार, लेन–देन हो तो उसको लिखित में ले लिया जाए और गवाह भी बना लिए जांए ताकि बाद में यदि भूल चूक हो तो या कोई पक्ष अत्याचार पर उतारू हो जाए तो फ़ैसला आसान हो और दिलों के बीच दूरी पैदा होने का ख़तरा न रहे।

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा कि मज़दूरों की मज़दूरी उसका पसीना सूखने से पहले दे दो। आप (स0अ0) ने फ़रमाया:

"जो हमें धोखा दे वह हम में से नहीं।"

(सही मुस्लिम: 101)

इसी तरह आप (स0अ0) ने सौदे पर सौदा करने से और आपस में दलाली करने से जिसमें ख़रीददार को धोखे में रखा जाए, मना किया है। यह भी कहा कि निकाह का पैग़ाम दिया जा चुका हो और बात तय हो रही हो तो उस पर कोई दूसरा पैग़ाम न दे ताकि झगड़े न पैदा हों। इसी तरह आप (स0अ0) ने कारोबार में सच्चाई, ईमानदारी, और क़रार की पाबन्दी की ताकीद की और उसके विपरीत झूठ,

बेईमानी और क़रार को तोड़ने मुनाफ़िक़ों की विशेषता घोषित कर दिया।

यह दुनिया का नियम रहा है कि जब हर व्यक्ति अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा करता है तो उसी से संबंध अच्छे होते हैं। वरना दिलों में रंजिश पैदा हो जाती है। यही कारण है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इसकी बड़ी ताकीद की। एक ओर काम करने वाले को आदेश है कि वह कोइ कोताही न करे लेकिन दूसरी ओर काम लेने वाले को आदेश दिया गया कि इस बात का ध्यान रखे कि वह अपने ही एक भाई से काम ले रहा है। इसमें वह अधिकता न करे वरना ज़ालिमों में गिना जाएगा। ज़ाहिर है कि आपस के संबंध अच्छे रह सकते हैं जब दोनों तरफ़ के लोग संतुलन से काम लें और अपनी ओर से कोताही या ज़्यादती न करें।

सामाजिकता

रसूलुल्लाह (स0अ0) ने जिस प्रकार सामाजिक जीवन व्यतीत करने की शिक्षा दी है, उसके नियम बताए हैं, वह मानवीय कृपा का एक बेहतरीन नमूना है। घरेलू जीवन, निकाह, तलाक, खुला (औरत का अपने पति को छोड़ना), बच्चों का प्रशिक्षण, मुहल्ले वालों के साथ बर्ताव, यह सब चीज़ें उसमें शामिल हैं। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने जगह–जगह पर व्यक्ति व समाज को ऐसी हिदायतें की हैं जिनसे रसूलुल्लाह (स0अ0) के कृपालु संदेष्टा होना प्रकट

होता है। एक ओर औलाद को आदेश है कि वह माता–पिता के साथ अच्छे से अच्छा बर्ताव करे। सम्मान में कोई कमी न करे। उनकी हर जायज़ बात माने। उनकी किसी बात पर 'उफ़' तक न कहे। हमेशा प्रेम का व्यवहार करे। इसी प्रकार माता–पिता को भी कहा गया है कि वे औलाद का बेहतर से बेहतर प्रशिक्षण करें ताकि वह उनकी आंखों की ठण्डक और दिल का चैन साबित हों। मानव संसार के लिए नमूना बन सकें। चरित्र व सदव्यवहार की मूरत हों।

एक ओर बीवी को आदेश है कि वह पति की आज्ञा का पालन करे और उसकी सेवा व राहत व आराम में किसी प्रकार की कोई कमी न करे। उसके घर की सुरक्षा करे और उसके न होने पर कोई ऐसा काम न करे जो उसको अप्रिय हो तो दूसरी ओर मर्दों को भी आदेश दिया जा रहा है कि बीवी का ध्यान रखें। हमेशा कमी निकालने में न लगा रहे। उसकी कमियों को बर्दाश्त करे और उसकी ज़रूरतें पूरी करे।

एक पड़ोसी दूसरे पड़ोसी के साथ क्या बर्ताव करे। यहां तक कि यदि किसी का थोड़ी देर का भी साथ हो गया तो उसके साथ क्या बर्ताव करे। नौकरों और सेवको के साथ क्या बर्ताव करे यह सब बातें स्पष्ट रूप से रसूलुल्लाह (स0अ0) की शिक्षा का महत्वपूर्ण भाग हैं।

निकाह एक मानवीय आवश्यकता है। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने इसको यह कहकर कि:

"निकाह मेरी सुन्नत है।" (सही बुख़ारीः 5063)

इबादत बना दिया। बीवी को खिलाना-पिलाना मानवीय आवश्यकता है। आप (स0अ0) ने इसको इस्लामी शिक्षा का एक भाग घोषित करके कृपा की और इन्तिहा यह है कि पति-पत्नी के संबंध को जो विशुद्ध रूप से अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए होते हैं, उनको भी आप (स0अ0) ने यह कह कर कृपा की कि यदि यह संबंध ग़लत तरीक़े पर बिना निकाह के स्थापित किए जाते तो गुनाह होता।

निकाह में किसी पर ऐसा बोझ नहीं रखा गया कि मुसीबत बन जाए। न मर्द पर, न औरत पर, यद्यपि वलीमा सुन्नत घोषित कर दिया गया जो प्रसन्नता प्रकट करने का एक साधन है।

तलाक़ की आज्ञा भी अत्यधिक आवश्यकता पड़ने पर दी गयी है लेकिन अलग होने को बहुत ही अप्रिय घोषित कर दिया गया है और औरतों की माहवारी के दिनों में इसको रोक दिया गया कि तीन तलाक़ एक साथ न दी जाएं ताकि संबंध जुड़ने की शक्ल बाक़ी रहे।

इस्लामिक सज़ाएं व धाराएं

इस्लामी कृपा की यह व्यवस्था अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था को स्थिर करने और उसको सही दिशा प्रदान करने के लिए, इनसानों के अन्दर इनसानियत पैदा करने और उनके अन्दर इनसानी शराफ़त व रहमत की भावना को उभारने और

उनको बाक़ी रखने के लिए एक ऐसी अल्लाही व्यवस्था है कि यदि इस पर इसके सही नियमों के साथ अमल किया जाए तो जन्नत का एक रूप बन जाए। अत्याचार का बाज़ार ठण्डा हो जाए और हर एक–दूसरे के लिए पूर्ण रूप से कृपा बन जाए।

कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने इन सीमाओं को बयान किया और रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उनको स्पष्ट किया और बदलाव की व्यवस्था स्पष्ट की। ज़ाहिरी तौर पर यह एक तकलीफ़ देने वाला काम नज़र आता है लेकिन हज़ार रहमतों का कारण है।

यह नियम समझ लेना आवश्यक है कि इस्लाम में न सिंगार करना उद्देश्य है, न हाथ काटना, न क़त्ल करना और न कोड़े लगाना, बल्कि वास्तविक उद्देश्य यह है कि पूरा समाज उन बेहयाइयों और अत्याचार के उन सभी रूपों से पाक हो जाए जो इनसानी समाज के लिए एक नासूर की हैसियत रखने वाली चीज़ें हैं। अल्लाह तआला फ़रमाता है:

﴿وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيَاةٌ يَا أُولِيْ الأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ﴾

"और क़िसास में तुम्हारे लिए ज़िन्दगी है, ऐ होश वालो! ताकि तुम एहतियात करने लगो।"

(सूरह बक़रह: 179)

ग़ौर करने की बात है कि सबसे ज़्यादा कठोर सज़ा ज़िना की है। लेकिन सबसे ज़्यादा शर्तें भी उसी के लिए

लगायी गयीं हैं। उनको देखकर लगता है कि इस्लाम वास्तव में सज़ा नहीं देना चाहता बल्कि उसका एक भय खड़ा करना चाहता है। एक स्वभाव बनाना चाहता है ताकि उसके नतीजे में लोग इस घिनावने काम के क़रीब न हों और औरतों की इ़ज़्ज़त व मान–सम्मान की सुरक्षा समाज के लिए समस्या न बन सके। वर्तमान हालात में इस बात का समझना ज़्यादा मुश्किल नहीं रहा। जबकि रोज़ हादसे होते हैं और औरतों की इ़ज़्ज़त पर हमले होते हैं और इस मामले में सरकार ख़ामोश तमाशाई बनी रहती है और उनकी समझ में भी कुछ नहीं आता। पत्थर मारने की सज़ा ऐसी है कि वह दी जा सके या न दी जा सके लेकिन उसके बारे में सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। फिर इसके बाद वही इसकी हिम्मत कर सकता है जिसका दिल ख़राब हो गया हो और उसका दिमाग़ जानवरों का बन गया हो और उसको ज़रा भी बुरे अन्जाम का ख़्याल न रह गया हो।

ज़िना के लिये शर्त यह है कि देखने वाले चार गवाह हों और वे चार ऐसे हों जिनके सामने पूरी बात स्पष्ट हो जिसको वे साफ़–साफ़ बता सकें। ज़ाहिर है कि यह आसान नहीं ऐसी गवाही तो उसी व्यक्ति के बारे में दी जा सकती है जो गंदगी की चरम सीमा पर पहुंच चुका हो और उसने सारी इनसानी हदें पार कर दी हों लेकिन ऐसा आदमी इनसानी आबादी के लिए ऐसा नासूर है कि अगर

उसका इलाज न किया गया तो पूरा समाज उसका शिकार हो सकता है।

यही हाल चोरी में हाथ काटने की सज़ा का है। उसमें भी ऐसी शर्तें हैं कि हाथ उसी वक़्त कटेगा जब कोई इस बुरी आदत पर तुल जाए और वह पूरे समाज के लिए नासूर बन जाए वरना यदि कोई खुले आम अपना माल डाल दे और कोई चुरा तो वह चाहे कितना ही ज़्यादा हो उसमें चोर का हाथ नहीं काटा जाएगा इसलिए कि इसमें ग़लती अपने माल को खुलेआम डाल देने वाले की भी है।

यही हाल सभी सज़ाओं व धाराओं का है। वे वास्तव में स्वभाव बनाने के लिए हैं ताकि दुनिया में अमन व शांति की हवाएं चलें और हर व्यक्ति सुकून व इत्मिनान के साथ रह सके।

इस्लामी जिहाद

जिहाद संघर्ष का नाम है और इस्लाम में जिहाद हर उस प्रयास को कहते हैं जो दुनिया के सुधार के लिए, वास्तविक शांति की स्थापना के लिए किया जाए। यहां तक कि जो कोशिश अपने सुधार के लिए की जाए उसको भी जिहाद कहा गया है। साफ़ है कि यह प्रयास जिस भावना के साथ किया जाएगा और उसमें जितना त्याग दिया जाएगा उतना ही यह काम श्रेष्ठ होगा। इसीलिए क़त्ल करना इसका सबसे श्रेष्ठ उदाहरण है जिसमें आदमी अपनी जान की भी परवाह नहीं करता और अपनी जान के साथ

अल्लाह के लिए उपस्थित हो जाता है और उसका उद्देश्य यही होता है कि दुनिया में भलाइयां फैले और ज़ुल्म व अत्याचार का राज समाप्त हो। न्याय व रहमत और मानवता का वातावरण स्थापित हो और यह चीज़ अल्लाह की रज़ा का साधन बने। अल्लाह के रसूल (स0अ0) ने इसके बड़े फ़ायदे इसीलिए बयान किये हैं कि यह बड़ी कुर्बानी है और इसकी तमन्ना की है।

"मेरी इच्छा है कि अल्लाह के रास्तें में क़त्ल किया जाऊ, फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर क़त्ल किया जाऊं, फिर ज़िन्दा किया जाऊं, फिर क़त्ल किया जाऊं।"

(सही बुख़ारीः 2797)

क्योंकि यह अत्यधिक त्याग है अतः इसके लाभ अनगिनत है लेकिन रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अक्सर अपने पवित्र कथनी व करनी से उसकी व्याख्या भी बतायी है जिससे नियमिक रूप से यह बात निश्चित हो जाती है कि वध वहीं किया जाएगा जब उसके सिवाए कोई रास्ता नहीं रह जाएगा। दुनिया की व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए कृपालु व्यवस्था लागू करने के लिए जो भी रुकावट बने उस रुकावट को हटाया जाए। इसका उदाहरण आपरेशन का है कि जब शरीर का कोई हिस्सा ऐसा बिगड़ जाए कि इलाज की कोई शक्ल बाक़ी न रह जाए तो उसको निकालना पड़ता है। अन्यथा पूरे शरीर पर उसका प्रभाव पड़ता है और मौत की संभावना बढ़ जाती है। इसी प्रकार संसार में जो फ़सादी विचार रखने वाले लोग हैं वे पूरी

संसार के लिए नासूर हैं। जहां तक संभव हो उसके सुधार का प्रयास किया जाए वरना उसको रास्ते से हटा देना ही संसार के सुधार के लिए आवश्यक है।

वध व जिहाद के लिए रसूलुल्लाह (स0अ0) के लिए नियम भी निश्चित कर दिये हैं। पहला क्रम सुधार हेतु निमन्त्रण का है कि लोग उसी रास्ते पर आ जाएं जो सुधार व भलाई का है। यदि वे इस पर राज़ी न हों तो दूसरा चक्र यह है कि वे इस रास्ते में रुकावट न बनें। व्यवस्था को बेहतर बनाने में मदद न करें तो रोड़े भी न अटकाएं। यदि वे लोग इस पर भी राज़ी नहीं होते और बाधा डालते हैं, लोगो को सही व सच्चे रास्ते पर आने से रोकते हैं, वह रास्ता जो रसूलुल्लाह स0अ0 ने दुनिया को दिया और उससे दुनिया में न्याय व कृपा की हवांए चलने लगीं, तो निःसंदेह उसमें बाधा डालने वालों से आवश्यक है कि जिहाद किया जाए। लेकिन यह ध्यान रहे कि सामने बड़ी ताक़त न हो और युद्ध में योग्य हो। आपस में एका हो। नेता का नेतृत्व हो फिर जिहाद करना हो और फिर उसमें भी रसूलुल्लाह स0अ0 ने स्पष्ट किया है कि बच्चों और औरतों पर हाथ न उठाया जाए। विशेष प्रकार के धार्मिक लोग जो विरोध नहीं करते उनको न मारा जाए। बाग़ और खेतियां न जलायीं जाएं, हाथ या बदन न काटे जाएं, रूप व शक्ल न बिगाड़ी जाए और ऐसा कोई काम न किया जाए जो मानवता और इस्लाम की न्यायिक व्यवस्था के विपरीत हो।

जीवन के हर भाग में आप स0अ0 की शिक्षाएं कृपा व कोमलता से परिपूर्ण हैं। रसूलुल्लाह स0अ0 ने फ़रमायाः

"अल्लाह तआला नर्मी पर वह देता है जो सख़्ती पर नहीं देता।" (शोएबुल ईमानः 8414)

और कहाः

"मुझे सख़्ती पैदा करने वाला बनाकर नहीं भेजा गया, मुझे तो शिक्षक और आसानी बनाने वाला बनाकर भेजा गया है।" (मुस्लिमः 3763)

उम्मत के लिए रसूलुल्लाह (स0अ0) का प्रेम व कृपा एक प्रेम करने वाली माँ से अधिक प्रतीत होती है। जिसको हमेशा अपने बच्चे के नुक़सान का डर सताए रखता है। रसूलुल्लाह (स0अ0) की पवित्र शिक्षाएं इसी प्रेम व सुहानुभूति का परिणाम हैं।

रसूलुल्लाह स0अ0 का कथन है किः

"जो किसी पर तलवार उठा ले उसका हमसे कोई संबंध नहीं।" (मुसनद अहमदः 16500)

फ़रमाया किः

"तुममे से कोई किसी पर असलहे से इशारा न करे।" (इब्ने माजाः 2225)

और

"यदि कोई किसी पर लोहे से इशारा करता है तो फ़रिश्ते उस समय तक उस पर लानत करते रहते हैं, जब तक कि वह उसको रख न दे।" (बुख़ारीः 6661)

फ़रमायाः

"यदि कोई मस्जिद या बाज़ार जाता है तो उसे चाहिए कि यदि धारदार चीज़ हो तो उसको थाम कर रखे कि कहीं किसी और को नुक़सान न पहुंच जाए।"

(बुख़ारीः 6664)

रसूलुल्लाह स0अ0 ने इसीलिए खुली हुई छत पर सोने से भी मना किया और आदेश दिया कि सोते समय चिराग़ बुझा दिये जाएं कि कहीं कोई चूहा इत्यादि उसको घसीट ले और उसके गिरने से आग लग जाए। (बैहिक़ीः 483)

ऐसी बहुत से शिक्षाएं हैं जो रसूलुल्लाह (स0अ0) ने दी हैं ताकि लोग हर प्रकार की मुसीबत से सुरक्षित रहें।

कृपा से परिपूर्ण शिक्षाएं

रसूलुल्लाह (स0अ0) की ज़ात दया से परिपूर्ण। आप की शिक्षाएं दया से परिपूर्ण। आपका नमूना कृपा का आदर्श और आपके कथन मनुष्यों के लिए ही नहीं अपितु सारे ब्रह्माण्ड के लिए कृपा का भण्डार हैं। जो कृपा की इस छांव में आ जाए वह संसार के लिए कृपा बन जाए। भूखा रहकर दूसरों को खिलाना। ज़ख़्म खाकर दूसरों के ज़ख़्मों पर मरहम लगाना। पेट पर पत्थर बांधकर ज़रूरतमंदों की ज़रूरत पूरी करना उसका नियम बन जाए। यह रसूलुल्लाह (स0अ0) की कृपा के आदर्श ही थे कि एक सहाबी रसूलुल्लाह (स0अ0) के मेहमान को घर ले जाते हैं। खुद और परिवार भूखा सोता है और मेहमान का पेट भरते हैं। ऐसे लोगों के लिए कुरआन शरीफ़ में यह आयत नाज़िल हुई:

﴿وَيُؤْثِرُونَ عَلَى أَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ﴾

"और वे (दूसरों को) अपनी जानों पर वरीयता हैं चाहे खुद तंगी का शिकार हों।" (सूरह हश्रः 9)

रसूलुल्लाह (स0अ0) सर्वसाधारण हेतु कृपा की शिक्षाएं उम्मत को दे रहे हैं। इरशाद होता है:

"रहम करने वालों पर सबसे बढ़कर रहम करने वाला रहम करता है। तुम ज़मीन वालों पर मेहरबानी करो आसमान वाला तुम पर मेहरबानी करेगा।" (अबूदाऊद:4941)

दूसरी जगह इरशाद होता है कि:

"जो लोगों पर रहम नहीं करता अल्लाह तआला उस पर रहम नहीं करता।"

वह दयावान, उसका नबी कृपा का आदर्श और उस नबी की उम्मत रहमत की उम्मत है। जिसको मेहरबानी की शिक्षा दी जा रही है। हर एक के साथ मेहरबानी करने की शिक्षा है। वह दोस्त हो या दुश्मन। यद्यपि मेहरबानी के रूप बदल जाते हैं।

एक बार आप (स0अ0) ने कहा:

"अपने भाई की मदद करो, ज़ालिम हो या पीड़ित।"

(तिरमिज़ी: 2255)

सहाबा (रज़ि0) ने पूछा: अल्लाह के रसूल! पीड़ित की मदद तो समझ में आती है। ज़ालिम की मदद कैसे की जाए? कहा: उसको ज़ुल्म करने से रोक दो। यही उसकी मदद है। लेकिन यह रोकना भी मुहब्बत के साथ हो। हमदर्दी की भावना उमड़ रही हो। सामने वाला समझ ले कि यह रोकने वाला मेरा शुभचिन्तक है। इसके अन्दर की मुहब्बत व रहमत बोल रही है। इसीलिए आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि: "किसी से मिलो तो मुस्कुराते हुए मिलो यह सदक़ा है।" (तिरमिज़ी: 1970)

किसी का दिल खुश कर देना रहमत का मज़हर है। फ़रमाया गया किः "भली बात कह देना भी सदक़ा है।"

(बुख़ारीः 2989)

घरवालों के लिए

यह कृपा हर एक के लिए है। बहुत से लोग ऐसे होते हैं कि दूसरों के साथ बड़े मेहरबान लेकिन घरवालों के लिए बहुत ही कठोर, बात–बात पर उखड़ जाने वाले, कथन है किः

"सबसे बेहतर वह है जो अपने घरवालों के साथ सबसे बेहतर हो, और मैं अपने घरवालों के लिए सबसे बेहतर हूँ।"

(तिरमिज़ीः 3895)

यह रहमत का कमाल ही है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने घरवालों पर जो भी ख़र्च हुआ उसको सवाब की चीज़ बताया और यहां तक इरशाद हुआ कि वह दीनार (रक़म) जो अल्लाह के रास्ते में ख़र्च की जाए और वह दीनार जो गुलाम को आज़ाद करने में ख़र्च हो और वह दीनार जो किसी ग़रीब को दिया जाए उनमें सवाब के एतबार से सबसे बढ़कर वह दीनार है जो घरवालों पर ख़र्च किया जाए। (मुस्लिमः 995)

और एक जगह फ़रमाया कि तुम जो भी अल्लाह की रज़ा के लिए ख़र्च करते हो और उस पर तुम्हें सवाब मिलता है। यहां तक कि तुम जो लुक़्मा (कौर) बीवी के मुंह में रखोगे उसका भी तुम्हें सवाब मिलेगा। (मुत्तफ़क़ अलैह)

और एक जगह कहा गया कि किसी भी आदमी के गुनहगार होने के लिए यही काफ़ी है कि जिनकी रोज़ी रोटी उसके ज़िम्मे है वह उनकी परवाह न करे और बिगड़ने दे। (अबूदाऊदः 1692)

आप (स0अ0) ने इशा के बाद बिना ज़रूरत इधर–उधर की बात करने से मना किया लेकिन बीवी के साथ दिल्लगी की बातें करने को सवाब का काम बताया अगर यह काम अल्लाह की रज़ा के लिए हो। यह वह रहमत की शिक्षाएं हैं जिसमें इनसानी मानसिकता व आवश्यकता का वह ध्यान रखा गया है कि उसकी परछायी भी कोई धर्म पेश करने में समर्थ नहीं है।

बच्चों के लिए

बच्चों के साथ ख़ास कृपा व दया की शिक्षा दी गयी हैः

"जो छोटो से प्रेम न करे और बड़ों का सम्मान न करे वह हममें से नहीं।" (तिरमिज़ीः 1919)

खुद आप (स0अ0) हज़रत हसन व हुसैन (रज़ि0) से कैसी मुहब्बत करते, प्रेम करते और उनको गोद में बिठाते, उनको चूमते और दुआएं देते। एक बार एक साहब ने फ़रमाया कि मेरे तो दस बेटे हैं मैं किसी को नहीं चूमता। आप (स0अ0) ने फ़रमायाः

"अगर अल्लाह किसी के दिल से रहमत को छीन ले तो मैं क्या कर सकता हूँ।" (तिरमिज़ीः 1911)

यह बहुत बड़ी रहमत है कि नमाज़ जैसा महान काम इस्लाम का सबसे पहला कर्तव्य है जिसके बारे में क़यामत में सबसे पहला सवाल होने वाला है। आप (स0अ0) फ़रमाते हैं:

"तुममें जो भी नमाज़ पढ़ाए उसे चाहिए कि वह नमाज़ हल्की पढ़ाए इसलिए कि तुममें बच्चे भी हैं, बड़े भी हैं और कमज़ोर भी हैं, मरीज़ भी हैं।" (तिरमिज़ी: 236)

एक जगह इरशाद होता है कि मैं नमाज़ पढ़ाता हूं बीच में बच्चे के रोने की आवाज़ सुन लेता हूं तो इस ख़्याल से नमाज़ छोटी कर देता हूं कि मां को तकलीफ़ होगी। यह उसी रसूल (स0अ0) की शिक्षाएं हैं जिसने यह बात भी कही थी कि:

"नमाज़ मेरी आंखो की ठण्डक है।" (नसाई: 3391)

जिसने हज़रत बिलाल (रज़ि0) से कहा:

"ऐ बिलाल! नमाज़ क़ायम करो और मेरी राहत की व्यवस्था करो।" (अबूदाऊद: 4985)

ईद का दिन है आप (स0अ0) घर में हैं। छोटी-छोटी बच्चियां दफ़ बजा-बजा कर गा रही हैं। हज़रत सिद्दीक़-ए-अकबर (रज़ि0) रसूलुल्लाह (स0अ0) के सम्मान में उन्हें रोकना चाहते हैं, आप (स0अ0) कहते हैं, छोड़ दो, ख़ुशी का दिन है। (नसाई: 1598)

औरतों के लिए

औरतें के बारे में आप (स0अ0) की शिक्षाएं वह है जिन्होंने औरतों को सम्मान की पराकाष्ठा तक पहुंचाया।

वह औरत जो रसूलुल्लाह (स0अ0) के आने से पहले एक जानवर का दर्जा रखती थी और खुलेआम उसका सौदा किया जाता था। इस दुनिया की विभिन्न सभ्यताओं का अध्ययन किया जाए तो अन्दाज़ा होता है कि उसकी हैसियत इनसान से गिरी हुई समझी जाती थी आप (स0अ0) ने उसको आज़ादी दिलाई।

जाहिलियत में औरत थी एक जानवर
ठोकरें खाती फिरतीं थी वह दर बदर
राह व मन्ज़िल से अपनी थी वह बेख़बर
कोई उसका न था शाम थी बेसहर
औरत को दिया हुर्रियत का मक़ाम
उस पर लाखों दरूद उस पर लाखों सलाम

लेकिन उस आज़ादी के साथ उसको सम्मान दिया और उसके अन्दर कोमलता भी रखी।

औरत को हया की चादर दी, मर्यादा की ढाल भी दी, शीशों में नज़ाकत पैदा की, व्यवहार के जौहर चमकाए, उसके साथ अच्छे बर्ताव की शिक्षा दी, इरशाद हुआः

"औरतों के बारे में बेहतर सुलूक की ताकीद है।"

(सुनन इब्ने माजाः 1801)

एक हदीस में फ़रमाया कि औरत को पसली से पैदा किया गया है। वह तुम्हारे लिए पूरी तरह सीधी नहीं हो सकती। बस तुम उससे फ़ायदा उठाओ और अगर तुम

उसको सीधा करना चाहोगे तो उसे तोड़ दोगे और उसका तोड़ना उसको तलाक़ देना है। (मुस्लिमः 1470)

एक दूसरी हदीस में आप (स0अ0) ने फ़रमाया कि सबसे कामिल ईमान रखने वाला वह है जिसका व्यवहार सबसे उत्तम हो और तुममें सबसे बेहतर वह है जो अपनी औरतों के साथ सबसे बेहतर हो। एक बार सफ़र में औरतें साथ थीं। सारबान मधुर वाणी वाला था उसके जानवर साधने की आवाज़ से ऊंट तेज़ रफ़्तारी के साथ भाग रहे थे, आप (स0अ0) ने फ़रमायाः

"हे अन्जशा! आहिस्ता आहिस्ता! कोमल मोतियों का ध्यान रखो।" (बुख़ारीः 6161)

यह एक प्रकार की कृपा से परिपूर्ण शिक्षाएं ही हैं कि आप (स0अ0) ने औरतों को हर भारी ज़िम्मेदारी से बरी कर दिया और मर्दों से यहां तक कह दिया कि उसको सुधारने में भी सख़्ती न की जाए वरना वे टूट जाएंगी और उससे अच्छा बर्ताव करने का पाठ पढ़ाया।

जंगों में हिदायत थी कि औरतों और बच्चों पर हाथ बिल्कुल न उठाया जाए और अन्त में रसूलुल्लाह (स0अ0) ने जिन आदेशों की ताकीद की उसमें औरतों के साथ अच्छा बर्ताव करने का आदेश दिया और उसकी वसीयत भी की थी।

माँ का स्थान सबसे ऊपर रखा और जब किसी ने सवाल किया कि अल्लाह के रसूल! मेरे अच्छे बर्ताव का सबसे अधिक हक़दार कौन है? तो आप (स0अ0) ने कहाः

तुम्हारी मां, चौथी बार पूछने पर आप (स0अ0) ने बाप का नाम लिया। (इब्ने माजाः 2706)

एक रिवायत में है किः "जन्नत माओं के क़दमों के नीचे है।" (कन्ज़ुल उम्मालः 45439)

कमज़ोरों के लिए

कमज़ोरों के लिए भी आप (स0अ0) ने विशेष हिदायत दी। एक जगह कहा गया कि जो नवयुवक किसी बूढ़े की सेवा करता है तो अल्लाह तआला उसके बुढ़ापे में उसकी सेवा के लिए किसी को लगा देते हैं, एक जगह कहा गया कि विधवाओं और निर्धनों के लिए प्रयास करने वाला ऐसा है जैसे कि अल्लाह के रास्ते में जिहाद करने वाला, एक बार इरशाद हुआ कि मुझे कमज़ोरों में खोजो, निसंदेह उन्हीं कमज़ोरो के कारण तुम्हारी भी सहायता होती है और रिज़्क़ भी मिलता है। (मुस्तदरकः 2509)

यतीमों के साथ

यतीमों के साथ अच्छा बर्ताव करने की आप (स0अ0) ने विशेष शिक्षा दी है और उसकी बड़ी श्रेष्ठता बतायी है। एक जगह कहा गया कि जो "जो यतीमों के सर पर मुहब्बत से हाथ फेर देता हो तो अल्लाह तआला उसके बालों की संख्यां के अनुसार उसके गुनाह माफ़ कर देता है।"

(मुसनद अहमदः 22809)

एक जगह कहा गयाः "मैं और यतीम का पोषण करने वाला जन्नत में इस तरह होंगे और फिर आप (स0अ0) ने

शहादत की उंगली और बीच की उंगली से इशारा फ़रमाया और दोनों को अलग किया।" (सही बुख़ारी: 5304)

ज़रूरतमन्दों के लिए

ज़रूरतमन्दों की मदद का वर्णन दसियों रिवायतों में मिलता है और उसके विभिन्न रूप रसूलुल्लाह (स0अ0) ने बयान की हैं। एक जगह सदक़े का वर्णन करते हुए कहा कि काम करने वाले की मदद करो या जो नहीं कर पा रहा है उसका काम कर दो यह भी सदक़ा है। रास्ता बता देना सदक़ा है और वह कार्य जो किसी को फ़ायदा पहुंचाए या उसको किसी तकलीफ़ से बचा ले वह भी सदक़ा है। रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ का हटा देना भी सदक़ा है और एक लम्बी व स्पष्ट हदीस में जो रसूलुल्लाह (स0अ0) ने अल्लाह तआला से रिवायत फ़रमायी जिसको "हदीस–ए–कुदसी" कहते हैं, उसमें कहा जाता है:

"अल्लाह तआला क़यामत के दिन बन्दों से सवाल करेगा कि मैं बीमार था तो तुम मुझे देखने नहीं आए, बन्दा सवाल करेगा कि ऐ अल्लाह! मैं तुझे कैसे देख सकता हूं तू तो सारे जहानों का पालने वाला है। अल्लाह कहेगा कि क्या तुझको नहीं मालूम है कि मेरा फ़लां बन्दा बीमार है क्या तू उसको देखने गया था? यदि तू उसे देखने जाता तो मुझे उसके पास पाता। इसी तरह कहा जाएगा कि ऐ आदम की औलाद! मैंने तुझसे खाने का मांगा था क्या तूने मुझे खाना खिलाया? बन्दा कहेगा कि ऐ रब्बुल आलमीन! मैं आपको

कैसे खिलाता? कहा जाएगा: क्या तुझसे मेरे फ़लां बन्दे ने खाने को नहीं मांगा था? क्या तूने उसको खाना दिया? यदि तूने उसे खाना दिया होता तो मुझे उसके पास पाता। इसी तरह इरशाद होगा कि ऐ आदम की औलाद! मैंने तुझसे पानी मांगा था तो क्या तूने मुझे पानी पिलाया? बन्दा कहेगा कि ऐ अल्लाह! आप तो तमाम जहानों के रब हैं मैं आपको कैसे पानी पिलाता, इरशाद होगा कि मेरे फ़लां बन्दे ने तुझसे पानी मांगा था, मगर तूने उसको नहीं पिलाया, अगर तूने पिलाया होता तो मुझे उसके पास पाता।" (मुस्लिम: 2569)

एक जगह कहा गया कि जो किसी मुसलमान से कोई तकलीफ़ दूर करेगा अल्लाह तआला आख़िरत में उसकी तकलीफ़ों में से कोई तकलीफ़ दूर कर देंगे कि जब तक बन्दा अपने भाई की मदद करता रहता है अल्लाह तआला उसकी मदद करता रहता है। (सही मुस्लिम: 2699)

नौकरों व सेवकों के लिए

"सेवक, नौकर और मज़दूर के साथ जो और इनसानों की तरह इनसान हैं और जिनका अपने मालिक और आक़ा पर एहसान है। आप (स0अ0) ने अच्छे बर्ताव की जो शिक्षा दी है, वह उसके अतिरिक्त है। जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने कहा कि जो तुम खाते हो वही उनको खिलाओ, जो तुम पहनते हो वही उनको पहनाओ और अल्लाह के प्राणियों को संकट में न डालो जिनको अल्लाह ने तुम्हारे अधीन किया है। तुम्हारे

भाई, तुम्हारे सेवक व सहायक हैं, जिसका भाई उसके अधीन हो, उसको चाहिए कि वह जो खुद खाता है वही उसको खिलाए, जो खुद पीता है वही उसको पिलाए, जो खुद पहनता है वही उसको पहनाए, उनके सुपुर्द ऐसा काम न करे जो उनकी ताक़त से बाहर का हो, अगर ऐसा करना पड़े तो फिर उनका हाथ बटाए।"

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) कहते हैं कि, "एक देहाती रसूलुल्लाह (स0अ0) के पास आया और पूछा कि मैं अपने नौकर को एक दिन में कितनी बार माफ़ करूं, आप (स0अ0) ने फ़रमायाः सत्तर बार।" वही बयान करते हैं कि "रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि मज़दूर को उसकी मज़दूरी पसीना सूखने से पहले दे दो।" (नबी–ए–रहमतः 416)

हज़रत अनस (रज़ि0) जिन्होंने रसूलुल्लाह (स0अ0) की सेवा में दस साल गुज़ारे कहते हैं कि कभी रसूलुल्लाह (स0अ0) ने मुझको किसी काम पर जो मैंने ग़लती से किया है यह नहीं कहा कि तुमने यह क्यों किया? और कभी भी उस काम पर जो मुझे करने के लिए कहा गया और मैं न कर सका कभी आपने नहीं कहा कि तुमने यह क्यों नहीं किया।

(अबूदाऊदः 4773)

हज़रत ज़ैद (रज़ि0) जो गुलाम की हैसियत से आए थे, सबसे अधिक प्रिय घोषित किये गये और उनके बेटे हज़रत ओसामा से भी आप (स0अ0) को बहुत मुहब्बत थी।

जानवरों के लिए

रसूलुल्लाह (स0अ0) की सर्वसाधारण हेतु कृपा का क्षेत्र केवल इनसानो तक ही नहीं बल्कि समस्त प्राणियों को उसका फ़ायदा पहुंचा। आप (स0अ0) ने यहां तक कहा किः

"हर जान वाले को आराम पहुंचाने में सवाब है।"

(बुख़ारीः 2363)

फ़रमाया किः "जब तुम्हें क़त्ल करना ही पड़े तो अच्छी तरह क़त्ल करो, और ज़िबह करना हो तो अच्छी तरीक़े पर ज़िबह करो।" (तिरमिज़ीः 1409)

फिर रसूलुल्लाह (स0अ0) ने उसको स्पष्ट कियाः

"तुममें जो भी हो वह अपनी छुरी तेज़ कर ले और ज़बह होने वाले को कष्ट न हो।" (तिरमिज़ीः 1409)

"शद्दाद बिन ओवैस (रज़ि0) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हर चीज़ के साथ अच्छा मामला करने और नर्म बर्ताव करने का आदेश दिया है, इसी लिए अगर तुम क़त्ल भी करो तो अच्छी तरह से करो, तुममें जो ज़बह करना चाहे वह अपनी छुरी पहले तेज़ करे और अपने ज़बीहा (ज़िबह किया जाने वाला जानवर) को कष्ट न पहुंचाए। इब्ने अब्बास (रज़ि0) से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने एक बकरी ज़मीन पर ज़िबह करने के लिए लिटाई। उसके बाद छुरी तेज़ करना शुरू किया। रसूलुल्लाह (स0अ0) ने यह देखकर फ़रमाया कि

तुम उसको दोबारा मारना चाहते हो। उसको लिटाने से पहले तुमने छुरी तेज़ क्यों न कर ली।"

आप (स0अ0) ने सहाबा किराम (रज़ि0) को जानवरों के चारा—पानी देने की हिदायत दी और उनको परेशान करने वालों और उनकी ताक़त से ज़्यादा बोझ लादने को मना किया और जानवरों की तकलीफ़ दूर करने और उनको आराम पहुंचाने को अज्र व सवाब अल्लाह से निकटता का साधन बताया और उसके फ़ायदे बताए। हज़रत अबूहुरैरह (रज़ि0) से रिवायत है कि एक व्यक्ति कहीं सफ़र पर था, रास्ते में उसको तेज़ प्यास लगी, सामने एक कुआं दिखाई दिया, वह उसमें उतर गया, जब बाहर आया तो देखा कि एक कुत्ता प्यास की वजह से कीचड़ चाट रहा है, उसने अपने दिल में कहा कि प्यास से जो मेरा हाल हो रहा था, यही उसका भी हो रहा है वह फिर कुवें में उतरा और अपने चमड़े के मोज़े में पानी भरा फिर अपने दांतों से उनको दबाया और ऊपर आकर कुत्ते को पिलाया। अल्लाह तआला ने उसके इस काम को कुबूल फ़रमाया और उसकी मग़फ़िरत फ़रमा दी लोगों ने पूछा या रसूलुल्लाह (स0अ0) चौपायों और जानवरों के मामले में भी सवाब है? आप (स0अ0) ने फ़रमायाः

"हर उस प्राणी में जो तरोताज़ा जिगर रखती है, सवाब है।" (सही बुख़ारीः 2363)

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) रावी है कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि एक औरत को केवल इस बात पर

अज़ाब दिया गया कि उसने अपनी बिल्ली को खाना-पानी नहीं दिया और न उसको छोड़ा कि स्वयं ही अपना पेट भर ले। (इमाम नववी बरिवायत मुस्लिम)

सुहैल बिन अम्र (और एक रिवायत में सुहैल बिन अर्रबीअ बिन अम्र) रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) का गुज़र एक ऐसे ऊंट पर हुआ जिसकी पीठ कमज़ोरी की वजह से उसके पेट से मिली हुई थी, आप (स0अ0) ने कहाः बेज़ुबान जानवरों के मामले में अल्लाह से डरो, उन पर सवारी करो तो अच्छी तरह, उनको ज़िबह करके उनका गोश्त इस्तेमाल करो तो इस हालत में कि वह अच्छी हालत में हो। (अबूदाऊदः 2549)

अब्दुल्लाह बिन जाफ़र (रज़ि0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) एक अन्सारी के अहाते में प्रविष्ट हुए, उसमें एक ऊंट था उसने जब रसूलुल्लाह (स0अ0) को देखा तो वह बलबलाने लगा और उसकी आंखों से आंसू बहने लगे। रसूलुल्लाह (स0अ0) उसके क़रीब गए और उसके कोहान व कनपटियों पर अपना हाथ फेरा। उसे एक सुकून हो गया। फिर आप (स0अ0) ने पूछा कि उस ऊंट का मालिक कौन है? एक अन्सारी नवयुवक आया और उसने कहा कि या रसूलुल्लाह (स0अ0)! यह मेरा है। आप (स0अ0) ने कहा कि तुम इस जानवर के मामले में जिसका मालिक अल्लाह तआला ने तुमको बनाया है, अल्लाह से नहीं डरते। वह मुझसे शिकायत कर रहा था कि तुम उसको तकलीफ़ देते हो और हर समय काम में लगाए रखते हो। (अबूदाऊद:2549)

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि0) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (स0अ0) ने फ़रमाया कि यदि तुम किसी हरी भरी जगह जाओ तो ऊंटों को ज़मीन पर उनके अधिकार से वंचित न करो और सूखी ज़मीन पर जाओ तो वहां तेज़ चलो। रात को पड़ाव डालना हो तो रास्ते पर न डालो इसलिए वहां जानवरों का आना जाना रहता है और कीड़े-कमोड़े वहां पनाह लेते हैं। (सही मुस्लिमः 1926)

इब्ने मसऊद (रज़ि0) बयान करते हैं कि हम लोग रसूलुल्लाह (स0अ0) के साथ एक सफ़र में थे कि आप (स0अ0) एक ज़रूरत के लिए वहां से थोड़ी देर के लिए प्रस्थान कर गए। इस बीच हमने एक छोटी चिड़िया देखी, उसके साथ दो बच्चे थे, हमने दोनों बच्चे ले लिए, वह यह देखकर अपने परों को फड़फड़ाने लगी, आप (स0अ0) आए और पूछा किसने उसके बच्चों को छीनकर उसे तकलीफ़ पहुंचायी है। फिर आप (स0अ0) ने आदेश दिया कि उसके बच्चे वापिस करो। यहां हमने चीटियों की एक आबादी देखी और उसको जला दिया आप (स0अ0) ने पूछाः

इसको किसने जलाया? हमने कहा कि हम लोगों ने, आप (स0अ0) ने कहा कि आग का अज़ाब देने का अधिकार केवल आग के रब को है। (अबूदाऊदः 2673)

रहमत की व्यापकता

रसूलुल्लाह (स0अ0) की रहमत का क्षेत्र केवल इनसानों व जानवरों तक ही सीमित नहीं था बल्कि उसमें सम्पूर्ण

सृष्टि शामिल है। आप की शिक्षाओं में ज़मीन का भी अधिकार बताया गया कि उस पर अकड़ कर मत चलो। उसको बेकार मत छोड़ो। खुद अगर कुछ नहीं कर सकते तो दूसरों को दे दो। वे इसको आबाद करें।

(सुनन नसाईः 3878)

फ़रमाया गया कि यदि कोई ज़मीन पर पेड़ लगा रहा है तो अपना काम पूरा करे चाहे उसका आख़िरी समय आ गया हो मगर वह अपना काम न छोड़े। आप (स0अ0) ने हरे–भरे पेड़ों का काटने से मना किया है।(अबूदाऊदः 5243)

और न जाने कितनी वे शिक्षाएं हैं जिनसे आप (स0अ0) की आम शिक्षा का अन्दाज़ा किया जा सकता है।

हज़ारों–हज़ार दरूद व सलाम और रहमतें हों मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह (स0अ0) पर जिनके सदक़े में दुनिया बाक़ी है। मानवता का भरम स्थापित है और आज जो कुछ भी दिलों में मानवता का दर्द बाक़ी है, मुहब्बत की कसक है, रहमत का प्रदर्शन है, वह सब उसी रसूलुल्लाह (स0अ0) उसवा–ए–रहमत ज़िन्दगी (कृपा के आदर्श जीवन) का परिणाम है जो पूरी दुनिया के लिए नमूना थी, नमूना है और हमेशा नमूना रहेगी।

बहार अब जो दुनिया में आयी हुई है।
वह सब पौध उन्हीं की लगायी हुई है।।